



I SSN 2229-547X VI DEHA

'विदेह' १२४ म अंक १३, फरबरी २०१३ (वर्ष ७ मास ७२ अंक १२४)



ई अकसे अछि:-

१. संगीदकीय संदमे

२. गद्य



२.१. जगदीश प्रसाद यादव-उपन्यास- बैरुकी बैरु (आर्गो.)



२.२. जगदीश प्रसाद यादव लोक कृती वसुधाय- बैरुकी/पेसती ले धरै

३. गद्य



३.१. बसुधाय साहूक कृती करिअ २



लेय नावायनी साहू लोक करिअ



३.२. आर्गीय अलकृषाव-गजन २



डा निर कृषाव प्रसादक कृती गीत



३.३. जगदीश प्रसाद सा मल्ल' गजन १-४ २. भगवती गीत १-२/ करिअ १-२/ गजन १-१



गंज टोपरी 'बरगशी' भक्ति गजन/



३.४.१. कान्छी कमागणी- आशुकर पूर्ण कवने २.



बिनीता सा- टैल ३.



ज्याति सा टोधी- गिया ज्वनी सँ आउ ल (बैलेन्ष्टांग डे पव बिशेष)



३.३.१. राजेदेर माडवक दु लोष्ट करिता २.



जगदीने शमाद माडवक दु छी गीत



३.७. रौल कुरुद पाठक- गजल २



३.१.१. बिन्दुशेखर ठाकुर "लपानी"- प्रेम / गजल २.



सुमित मिश्र- गजल १-२

मिथिवा कवा-संगीत १.



ज्याति सा टोधी २.



राजेश मिश्र (द्विपथ मिथिवा) ३.



उमेशे मडव (मिथिवाक रसगति/ मिथिवाक खीर-खल्ल/ मिथिवाक जिनगी)



बौबाना सुते-१. गंकज टोधी "बरनशौ"- रौल गजल १-३ २.
करिता १-३



सुमित मिश्र- रौल



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड सागुष्ट



VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह ई-पत्रिकाक सब्झा पुरान अंक (ब्रैल, तिवहुता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपव उपजस्ट्र अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह ई-पत्रिकाक सब्झा पुरान अंक ब्रैल, तिवहुता आ देरनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.हरीड एनीमेष्टबलेँ अपन साँघँ/ रँगपव नगाँडु।



रँग "लेखाँड" पव "एड गाडजेष्ट" मे "हरीड" सेलेकठ कए "हरीड यू.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँग लेलाँ सेहो बिदेह हरीड प्राँष्टु कए सकैत छी। गुगल वीडवमे पठरी लेन <http://reader.google.com/> पव जा कए Add a Subscription रँग लिंक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक आ Add रँग दराँडु।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साँघँ

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे बहि देखि/ मिथि पारि बहन छी, (cannot see/write Mithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीटाँक लिंक सभ पब जाऊँ । संगहि बिदेहक सुँत मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-पुवान अक पढ़ू ।
<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँगमे ऑनलाइन देरनागरी टाँगप कक, रीँगसँ कापी कक आ रई डाक्यूमेण्टमे पोस्ट कए रई फाँगकेँ सेर कक । विशेषे ज्ञानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Mithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Mithili e magazine in .pdf format and Mithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवान अक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ ह्याटे सभक फाँग सभ (उँचाका, रई सुथ साव आ दुराक्षित मंत्रे सहित) डाउनलोड करवाक हेतु नीटाँक लिंक पब जाऊँ ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



ज्ञातिवैश्व पुरँ मलकरि विद्यापति । भावत आ लपानक माँष्टिमे पसबन मिथिलाक धवती प्राँटिण कानहिँसँ महान पुकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान पुकय ओ महिना लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखू ।



शौवी-शैकबक पानरंगि कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० बर्य पुरँक) अतिनेथ अकित अछि । मिथिलाक भावत आ लपानक माँष्टिमे पसबन एहि तबहक अग्राय प्राँटिण आ नर सुगन, चित्र, अतिनेथ आ मुर्तिकलाक हेतु देखू मिथिलाक खोज



मिथिना, मैथिन आ मैथिनीसँ सङ्गित सुचना, सम्पर्क, अल्लयण संगति बिदेहक सर्ट-गजल आ नूज सर्सिम आ मिथिना, मैथिन आ मैथिनीसँ सङ्गित रेसोअण्ट सभक समग्र संकलनक लेन देखु **बिदेह सुचना सर्पक खस्यनी**

बिदेह ज्ञानरतुक डिस्कसन फोकसप बजड ।

“मैथिन आब मिथिना” (मैथिनीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरतु) पब जजड ।

१. संपादकीय

[**ला एस्ट्री: मा प्ररिगे** २००+ ग. मे डुपन आ सहिब अकादेमी प्रबफाब लेन एकब चगन २०१०, २०११ री २०१२ मे ले भ२ सकले । आरि ग. पोथी मैथिनी सहिब लेन सहिब अकादेमी प्रबफाब लेन उंगल्ले ले बहत । ए तबहक आला उदाहरण बहन अछि । **ला एस्ट्री: मा प्ररिगे** क मैथिनी सहिब आ रिग्ने सहिब म्हा स्थान नीटाँक आलेखमे निकषित कएन ज्ञा बहन अछि । ग. शिखना आगाँ सेहो ज्ञावी बहत ।]

भाग-२ (आगाँ)

टाबिष्ठा उतब आधुनिक नाटक: सङ्गखन रैकेठक खेच नाटक “रैष्ग हलँब गोडो”, हेरोलड पिष्ठबक अत्रेजी नाटक “द रैथडे पार्सी”, रौदन सबकाबक रीशा नाटक “एरम् गङ्गज्जीत” आ उदय नावायग सिह णटिकेताक मैथिनी नाटक “ला एस्ट्री: मा प्ररिगे”

उतब आधुनिक तारथखण निबर्षक (एरसड) नाटक: एण एरैस्डण्ट गोडो क सङ्गखन रैकेठ द्वावा स्रग खेचसँ अत्रेजीमे अल्लरद कएन गेन “रैष्ग हलँब गोडो” शीर्यकसँ आ उगशीर्यक “अ ट्रेजिकामेडी गण ठुँ एकहसँ” सेहो ज्ञोडन गेन जे खेच संकषणमे ले डन । ट्रेजिकामेडी माल ट्रेजेडी आ कामेडीक मिश्रण । एकब कथानकसँ स्पष्ट, भ२ गेन हएत जे एकब ऋथा पात्र “गोडो” ए नाटकमे डेहे ले, दोसब ओ तारक दृष्टिसँ सेहो नाटकक ऋथा तह ले डे । नाटकक ऋथा तह डे “रैष्ग” माल रैष् तकणाग । ताय, सृज, रौजर, टुप्प बहर, चनरौक तबीका, ग. सभ ए नाटकक अतिम अंग छि । देशे-कानमे तालेरौना रँजजावा जौरणशीनीक लोक सभ अछि एकब ऋथा पात्र । रिष् रँजले शीवीरिब तारसँ अतिणय करेरौना “माग्या कनाकाब” जेकाँ ए नाटकक पात्र अतिणय करे छथि । नाटकमे रैष् आ सतुनणक णर परिभाया ग. नाटक गठेत अछि । आधुनिक थियेठबकेँ ग. नाटक णर हगमे प्ररेशे कवारैत अछि । ख्रिष्णक “मुजिक हॉन” थियेठब मे संगीत हान्य बहे डले जगमे जौरणक निवाशि “एरस-ठक”सँ रैकेठ आ बाजलेतिक-सामाजिक आठक हेरोलड पिष्ठब हान्य कणमे देखरैत छथि । “ला एस्ट्री: मा प्ररिगे” सेहो स्रक (री णबक) क द्वाबपब आवसु होगए जतए गला तँ सभ मृत लोक पंड्रिह छथि ऋदा एकष्ठी जौरित रात्रि सेहो छथि । उचका रौजारी णग सभ-सभ बहे । प्रेमी-प्रेमिकाक ओतए रिवाहो भ२ ज्ञाग डे । लताजी मुहक रौदो रिनयसँ एरी लेन अतिशेषु छथि । रामपथी ओतो रौहबसँ समर्थन दे छथि । री.आ.ग.पी. क्यु सँ ओतो त्राण ले भेठे डे । ऋदा जग दवरँज्जाक रौहब लोक पंड्रिह छथि से एक हगमे खुजितो डन आ रँज सेहो होगत डन, ग. बहशाछाष्ण ट्रिगुण करे छथि । माल आरि ग. ले खुजत तखण गनुजारी कथीक ? णन्दी-डुंगी कहै जे सौनाक दवरँज्जा स्रण



ले, मात्र बुमराक दोष छन। अतिलता रिरक क्रमाव अपन “सबलमा” पुढन गेनापव कहे छथि जे कतेक योषिकरमँ तँ जाति हूणकव पाछाँ छोटनक अछि से उर्फ तँ छोटिये देन जाए। रामायणीक कथामे ले सुश्र-नर्क होग छै आ नहिये यमवाज-द्विगुण, द्वादा एतुका परिवर्तित देखि क२ ओ अरिष्टीस कोणा कवथु ? द्वादा यमवाजे हूणका कहे छथिन्ह जे ओ दुःसुग्न हूथ। यमदुत सब कइ ह नग अलने ठाठ छथि कियो बुजेने भेटैते ले छथि, द्विगुणक मेकप रना दात्री देखि त्रिधर्मणीक हंसनापव सुंगी कहे छथि जे त्रिधर्मणी सेहो हूणके सब जेकाँ कनाकाव छथि। योणक दवरञ्जा योण छोटि एनापव कोणा खूजत ?

होएट नाटक “रेष्टिंग हॉव गोडो”, हेरोलड पिंठवक अंग्रेजी नाटक “द रर्थडे पार्टी”, रानन सबकावक रंगीना नाटक “एरम् गुरुद्वीत” आ उदय नावाया मिह नटकेताक मैथिली नाटक “सा एंर्पी: मा प्ररिनि” पुवाण नाटक जेकाँ परिवर्तित आवनु आ अन्तक परिवर्तित अलग अछि। ओ कते सँ शुक भ२ जागत अछि, कते खतम भ२ जागत अछि। एरम् गुरुद्वीत से लेखक पात्र तकि बहन अछि, आ अगदोके ओ दर्शक दीर्घाकेँ सन्नाहित करैत चाकिष्टा देवीसँ अएन दर्शककेँ मटपव रँजा छै आ ओकवा नाटकक पात्र रँगा दै। चाकि पात्र ओकवा प्रिय छै, ओ निर्मल ले “गुरुद्वीत” छी। ओ अलग अछि, गुरुद्वीत जेतेरना एतिहासिक पात्र अछि। ओ अगल रिमन, कमान जेकाँ नीथपव ले छनत। द्वादा अन्त जागत जागत गुरुद्वीत सेहो अगल रिमन, कमान एरम् गुरुद्वीत भ२ जागए।

हेरोलड पिंठवक “द रर्थडे पार्टी”क प्रावन्तमे तेहेन समीक्षा भेन जे हूणकव लेखकीय जरीण समाप्त हूथए पव आरि गेन। द्वादा एकव पुणर्पाठ एकवा न्नासिक रँगा देनक। किछ बहनु, किछ आँतककेँ ओ सम्पूर्ण नाटकमे रँगल बहनाह, हाथ कथारकेँ आव मजगुत केनक। सृजन ले अछि, दुन री रँग२ छैत अछि ? की ओ स्त्रीकेँ दुषित करैथ, री ओ अपन पनीक हल केनक ? द्वादा मेग तँ ओकवा पमिल करै छै ? ओकव पहिन् आ दोसव कअर्थ, के तकव रीधक रँगले ? की ओ सुठ रँजेथ री रतमान सामाजिक आ बाजलैतिक परिवर्तयासँ अलग रारहावक अछि ? ओ मेगकेँ मोक२ छैथ द्वादा तेयो कि ए मेग ओकवा पमिल करै छै आ सामाजिक आ बाजलैतिक शक्ति ओकवा कि ए आ कोणा उँठा क२ न२ गेन जाग छै, जकव सिपानी गोडेरँगा (गोडेरँगाक अन्तक रंग बहनुयय रारहाव) सुग आदर्म उँपहित ले क२ पाँरै छथि।

सुन-समान सडकक कातक माँक टिमका आ पत्रहीन नग गाठ “रेष्टिंग हॉव गोडो” क सृज छिथ, ताना नागन दवरञ्जाक रीहवक सुन/सुन “सा एंर्पी: मा प्ररिनि”क सृज छिथ तँ “एरम् गुरुद्वीत”मे दर्शक दीर्घा, सए सृज रँगि जागए। “द रर्थडे पार्टी”मे घबक कोठनी सृज छिथ द्वादा पिंठव एकव पात्र सृजन ले देवीडाक “रिखलन” पछतिरँ कथला खल क२ दैत छथि तँ कथला हफरँ जोडि दै छथि। लोक री दर्शक ओकरासँ अर्या कव२ नलैथ, खल सहाय्युति कव२ नलैथ खल घृणा कव२ नलैथ, द्वादा सृजनी गोडेरँगा आ योकाणक सोमाँ जखन निर्मल बुनि पड़ैथ तँ दर्शक ओकरा रंग अगणारकेँ देखैथ, जेना ओ “एरम् गुरुद्वीत” मे गुरुद्वीत रंग अगणारकेँ देखैथ। “रेष्टिंग हॉव गोडो” मे जखन लोक गुनाम रंग अगणारकेँ देखैथ तखल सहाय्युति देखेनापव चमेठी पडनापव ओ हतथत बहि जागए। “सा एंर्पी: मा प्ररिनि” मे त्रिधर्मणी अर्यारिनि बन्ना-योणकारकेँ द्वादाकरी कहे। पाकेठमाव गुरुद्वीत ब्रजपव कपेयाक रीनी नगरैथ। नदी-सुंगी कहेथ जे सब गोठे सए छी द्वादा का गोठे पुँ सए ले रँजलौ। “एरम् गुरुद्वीत”मे गुरुद्वीतक हात मिनीफस सन छै। शोषित ग्रीक मिथक मिनीफस, रंगमावक पाथवपव चठरीक जेन अतिशु, आ जखल ओ छेपीपव पहुँचैथ आकि पाथव हफर गुवकि क२ ओकवा नीटाँ आनि दै छै। सयवथक काज आ जरीण निवर्थकतापव आधावित अछि। सयवथ अस्फुन होगने अतिशु अछि, गुरुद्वीत जेकाँ ? आकि “सा एंर्पी: मा प्ररिनि”क सुश्र-नवक, यमवाज-द्विगुणक अमायता देखेनाह गणकेँ देखि रँदनत ? द्वादा तखल यमवाजे कहे छथि जे देखेनाह गण दुःसुग्न भ२ सकैथ ? “रेष्टिंग हॉव गोडो” अन्तक अन्तजावी ले छिथ, रेकेठ सुग कहे छथि जे



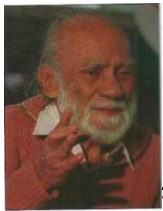
गन्तुजावी “गाँड”क ले “गोडो”क तऽ बहन अछि, गुना फिस्टियेसिठी “मिपोलोजी” अछि से ओ तकव प्रयोग करै छथि । अस्तिहुरादी रिटावधावा, मन्वथ आ जैमाल्ड मड निवर्थक अछि, अरैसड अछि ।



“रैष्टिंग हॉव गोडो” दु अकीय ट्रेजी-कामेडी अछि । सङ्गअन रैकेष्ट द्वावा १९५२ १. से खेँट भायामे निखन गेन आ एकव पहिन प्रदर्शन पेरिसमे १९५३ १. से भेन । एकव अंग्रेजी संस्कारक प्रदर्शन नदनमे १९५५ १. से भेन आ अंग्रेजी संस्करण १९५६ १. से प्रकाशित भेन ।



हरोडे पिठवक अंग्रेजी नाटक “द रर्थडे पार्टी” कैम्ब्रिजमे १९५८ १. से मटित भेन आ १९६० १. से प्रकाशित भेन ।



रौदन सबकावक राँगा नाटक “अरम् गद्दजीत” १९६२ १. से निखन गेन आ १९६५ १. से कनकतामे मटित भेन ।



उदय नारायण मिश्र 'बटिकेताक "ला एस्ट्री: मा प्रिमी" २००८ अ. मे अ-प्रकाशित आ
हब ओही र्थ प्रकाशित भेल । १९ फरबरी २०११ केँ कर्णिक निर्देशनमे कानिदास बैंगनय, पठनामे अ
ठेठ घाँक बटिक मचित भेल ।



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

अपन मतर ggajendra@videha.com पब गठ ।

२. गद्य



२.१ अगदीमे प्रसाद माडव-उपन्यास- रँडकी रँलि (आगाँ.)



२.२. अगदीमे प्रसाद माडव अक दुष्टी वधकथा- रँडकी रँलि देसती ले खले



अगदीमे प्रसाद माडव

उपन्यास- रँडकी रँलि (आगाँ.)

रँडकी रँलि

टाबि भाए-रँलिक रीट सुजाचना, पहिन बहल रँडकी रँलिक बाँसँ गाम भयिमे जानन जागत छथि ।
रीया दु-अठ गक जमीनरना परिवार ।



डिवासी रैथिक अरुमथामे जिनगीक ठनासक आथिरी सीठ ीमे पहुँचन सुजोचना भातीजक संग रिनसपुव-मयय एदेमिसँ अगल गाड़ ीसँ गाम पहुँचनी । गाम पहुँचते हनचन भ२ गोन सुजोचना रँलिन एनी । ओगा पडिना पीठ ीक अशुकवा कबेत अगिओ पीठ ी, दीदीक जगह रँलिन कहे डुगुहि । एरू-दुगुये ठेनक रिया-पता आ जनि-जातियो पहुँचए नगनी । डेडा यापव गाड़ ी लोक बघुषाथ (डोष्ट भागक जेठ रँषी) उतवि एका-एकी सभकेँ उताव नगन । दु रैथिक पोताकेँ सुजोचना कोवामे लल गाड़ ीसँ उतवनी ।

बिघर-पुघर शीब, टाणीक रँनो दनु हाथमे, महीन, सादा साड़ ी पहिबल । थून-थून देह । उतबिते टाक दिस आँथि उठा तकनगहि तँ रूमि पडनगहि जे जेरा कानसँ रिपवीत सभ किड रूमि पडए । जिनगीक आशा तोडा घबो-दुआव आ गामोकेँ गोड नागि कहल बहियनि जे अतिम दर्शन केल जाग डी । कहाँ आशा डन जे गामक ऋह ह्येव देखरँ । तग रीट जेठ भोजागपव नजवि पडनगहि । नजबिसँ नजवि मितिमे दनुकेँ रँजव नागि गोनगहि । ऋहक रोन रँन बहनगहि तग रीट मूषकठ देवा, ठेगा हावे रँसमतिया दीदी सेहो पहुँचनी । जलिया सुजोचना गामक रँषी तलिया रँसमतिया दीदी सेहो । एक उमेविये दनु गोठे, ऋदा सुजोचना रँलिन तीन मास जेठ डुधि । रँसमतिया दीदीकेँ देखिते सुजोचना रँजनी- “साजे भयिमे एते नठेक गेलै ? ”

दनुक जिनगी रँचेसँ एकठाम रीतल रँजेमे कोला कमी बहरँ ल कवए । निधोक भ२ रँसमतिया दीदी रँजनी- “तँ ल भाए-भातिजक कमनहा था क२ गेड । रँनि गेलै, हमवा के देत ? ”

सुजोचना- “किअ तगरान तोवा थोडे रँगाठ डुथून जे ली देमिहाव डो ? ”

रँसमतिया- “हँ से तँ अडिये, ऋदा जएह कमाएत तेहीमे ल देत । अडडा, कह जे ठुँठनाहा नग कज्जनी ल तँ बहलौ । नीक जकाँ हड्डी जूष्ट गेलौ किल ? ”

“हँ । आरँ तँ रँनरीला उठरँ डी, पोताकेँ कोवा-काँथमे न२ क२ थनरँ डिध । अगल गाड़ ीयो डी, आरँ गामेमे बहरँ । ”

“एँ उमेवमे अमकले बहि लेतो ? ”

“डोष्ट भाए- ऋलसवो बहत किल ? काहि ओहो आउत । तारँ कहुना अनी ठुँठनाहा घबसे बहि पजेरौक घब रँगाउत । हम सभ कते जारँ कवरँ । ऋदा जारँ आँथि तकेँ डी, तारँ तकक ओगिाण तँ कवए पडत किल ? ”

टोदह रैथिक अरुमथामे सुजोचनाक रिखाह भेनगहि । जलिया पिताक साधारण किमान परिवार तेहल परिवारमे रिखाहो भेनगहि । समाजमे अथन धरि धन ली हने-मुनक महत अधिक बहन ऋदा लेला-देन तँ चरिते डन । नीक-मुनक कन्याक मण्डे रँसी । ओगा अगल-पिताक हन-मुनसँ दरँ परिवारमे रिखाह भेनगहि, ऋदा कोला लिकेँ षी ली, समाजमे कतेको गोठेकेँ भेन डुगुहि आ होगतो अडि । कोला प्रम ली उठन ।

मिथिलाचनक ओग गाममे सुजोचनाक जन्म भेन डुनगहि जग गाम होगत एकठा धारो अडि आ पुँसँ कोसीक पागि आ पडिमसँ कमनाक पागि सेहो रँकसातक मीमगमे रँडा रँनि अरिते अडि । ओगा कोसी-कमानक रँणह ली बहल अरँत-अरँत रँडा पतवा जागत ऋदा रँवथोक तँ कोला निशित



ठैकान बहिये छै । जग मान रँवखा रँसी भेन तग मान रौठा यो नमह-नमह आएन आ जग मान कम रँवखा भेन रौठा यो छोठे अरैत । खेतीक लेन रँवखा छोड़ा दोसब कोला साधन ले छन । मकड़ की कबीरसँ किछ खेती होगत छन दूदा ओ तँ पोखरिसँ होगत छन जे रँशीख-जेठमे अपनल सुधि जागत । जे पोखरि गहीब बहेत ओग पोखरिक पाणि डुगब अलैमे तीन-चारि पाड़ कबीर नगि जागत । गहूमक खेती बहियेक रँवारँव होगत छन, कियो-कियो दु-चारि कष्टी क२ लेत छनाह ।

छन गोठेक परिवार चनरैमे सुजोचनक पिता हबिहबकेँ कर्जागत तँ बहरें कबनि दूदा गाममे मात्र हबिहबे एहेन ले रँहूतो एहेन छनाह जे हुनकोसँ तारी जिगगी जीरैत छनाह । एक तँ महिना शिक्षाक चननि ले, दोसब गाममे साधनोक अतार । ओना रौहबसँ कम सम्पर्क बहल गाममे शिक्षाक ओते जकबतो बहिये छन । रँरनारिक त्रणक जकबत छन जे सतमे छलैक, अखला छैक । सुकनक दूह सुजोचना ले देखनी ।

रिखाहक तीन मान पढाति सुजोचनाक दूवागमन भेन, मान्नुव गेली । रँथ-पाँटे-डुरैक पढाति मान्नुबसँ सुजोचनाकेँ भगा देनकबहि । भगरैक कावण बहेक जे मन्ताण ले भेनबहि । ओना ल बहियो डाकूठी जाँट कवाओन गेनबहि आ ल मन्ताण ले हेरौक दोय किनकामे छनबहि, से फर्डी भाओन गेन ।

समाजमे एहेन पडलसँ होगत जे कोला महिनाकेँ ककप कहि मान्नुबसँ ठौठिया क२ भगाओन जागत तँ कोलाकेँ सौतिन तब रँसा भगाओन जागत । गत्यादि-गत्यादि । रँदिक पछति एक-पुकर्य एक नारीक सम्बन्धकेँ पहिन श्रेणीक रिचाव समाज मानल अछि, तगठाम वंग-वंगक रँधा रँगा नारीकेँ अगुआगसँ बोकन गेन । वंग-वंगक मगन-अगमगन कहि, तँ उठवी-ठठवी रँगा दरौओन गेन । एहेन स्थितिकेँ जँ बोगक जर्डी रँशा तकल आ ओगठामसँ रँेचारिक रँष्ट रँलोल रँशा आग एकैसम शैतारँदीमे पँहुचन छी । ग रँिनहन सतुय छैक जे कियो शैव होग आकि मियाव सतकेँ अपन कानखण्डक लेखा-जोखा होग छै । तँ ओ अगिना-पडिना दोखक भागी भेना, रँुमरँ ग ननमाति भेन । तँ, जँ कियो अपला हाथे किछ केनबहि तेकब जरौरदेह तँ भेरें कएन ।

सुजोचनाक पिता हबिहब समाजक ओल रँयकृति जे आँखिक सोनमामे कियो गान्ठक आम तोडा लेत रा खेतक धान लाटि लेत तँ एतरेँ चेतारणी दैत रँजेत छनाह जे जाग ि डियौ रँागकेँ क२ जे ग छोड़ । धान लाचनक कि आम तोडनक । रँुमिअहबहि जे जखन तौवा कलैठी पडतो । समाजमे सहयोगक रिचाव छन । अपन गावजल अपन रँेच्छाकेँ सिखलैत छन । दूदा एकठी जरँवदस गुण परिवारबमे छनबहि जे महीनाक चारि-पाँट बरि, चारि-पाँट सोमक सोमरावी मंग कतेको पारमिक उपाससँ सोजो छोठे क२ लेल छनाह । सबसरतीक आगमन परिवारबमे भ२ गेन छनबहि । सिर्फ अपनल हबिहबेठी ले पडल । कावणो छन मगव परिवारबमे एक समाग गिवहस्थियो करैत छनाह । तँ शुकरसेँ पठ । ग दिन ले नगाओन गेनबहि । कान-क्रमे ओहल-ओहल तैयारी पडुअएन । ग दीगव भेन । ओना किछ समाज एहला छन जे एहेन-एहेन अरमथा (सुजोचनाक मंग जेहेन भेन तेहेन) केँ रँाहुरँनसँ बोकनक दूदा समाजोक कठमियाँ तँ रँेडका मुस कतिते छै । जाति-जातिकेँ रँेष्टि सभ बोगसँ बोगाएन छी । कियो कम कियो रँेसी । दूदा एहेन-एहेन अपबाध समाजक दूदा ले रँनि रँनि, जातिय दूदा रँनि कमजोब पडूत गेन । कान-क्रमे जातियोसँ परिवारबमे पँहुच गेन । एक जातिकेँ नीट देखाएँ रा जातिक तीतब कोला परिवारबकेँ गिटाँ मलौबजनक साधन रँनि गेन अछि ।

सबसरतीक आगमनसँ हबिहबक परिवारक रिचावमे किछ नरीनता तँ आरिये गेन अछि । मान्नुबसँ भगाओन सुजोचनाकेँ परिवार सहर्ष अपणा केनबहि । अपनरैक कावण भेन जे परिवारक सभ अपनल



गन्ती माणि जेनन्ति जे ओहण हन-मुनमे डेगे ले उठरौक चाही । ओहणसँ झूहो नगाएरौ नीक ले हएत । रौपक दुनकथा रौंठी दोसब रिखाह कऽ जेनन्ति । झूदा सुजोचना अपनार्के रौधर्या ले रूँमनन्ति । हाथक टूड़ी वखनि बहनी । मस्रु आगु रौठन । नम्ही जल्हा दवरौज्जापव हँसी-खुशीसँ आरि जाग छुधि तखन केतरो ताड़-दाकक खर्चा हवाएजे बहे छै । तल्हा ले सबसुरतियो वगड़-मगड़ छुधि । सुजोचना जकाँ ले ले छुधि जे मले-मल सकनपक संग जौरौक रौंठ पकड़त, ओ तै तेहेन वगड़ छुधि जे एकठौ सौतिनक कोष गण जे हज्जारो सौतिनकेँ मोटिया अपन हिस्सा जेये कऽ छोटत । थकथक कहल भऽ जेते जे जेठकीक जेरुंथा जौनि कम देते ।

सबसुरतीक रूप परिवारमे रौदनन । रूस्रुत पछुतिक जगह नर-नर पछुति थुक भेन । रूस्रुतोक पछुति बहरो कएन । झूदा शिक्षाक रूँमियादी पछुतिसँ उछानि देनक । सुजोचनाक पीठ पवक जेठ ताए हणसब मैथ्रिक पास तद्दुविया सकुनसँ केनन्ति । पवीरी रौंकावीसँ त्रसुत परिवार । लोकीक तनासमे कनकता गेना । दु सान बहनाह । भायाक दुरी, शिहव-गामक दुरी तै सपयुंठे बहे । दु सान पढाति हणसब पीठरुं ध्रैषिण केनन्ति । लोखव प्राणकीक शिक्षक रौंननाह ।

हणसबसँ छोट झलसब सेहो मैथ्रिक पास तद्दुविया सकुनसँ केनन्ति । सांगस पढत । जलता काओजेजमे सांगसक पठ ग ले होगत । गव नगरौत खगड़ियाक गव नगौनन्ति । ओही ठामक रूस्रुत रूँनानयमे रूँनार्थीकेँ भोजन-डेवाक रौंरसुथा सेहो करैत अछि । कोसी कओजेज सेहो छैहे । सांगसक रूँनार्थी, नीक जकाँ री.एस.सी केनन्ति तग रीट रिखाहो अहसबक परिवारमे भऽ गेनन्ति । चाबि भाँगक बैयावी हबिहबक छनन्ति, तगमे रौंरावा भऽ गेनन्ति । दुनु पवाणी हबिहरो मवि गेनन्ति । दुनु भाँगक परिवार... ।

(जारी..)

ई बलापव अपन मतर ggaj_endra@videha.com पव पठाउ ।



जगदीश प्रसाद माडव जौक दुष्टी नमुकथा- रौंजोव दोसती ले धरौ

रौंजोव



बाज-दबराबस घुमि क२ अरिंते रँडका-भैया हाँग-हाँग रँग बाथि जूता निकानि रँसुरि जकाँ पर्गपव चाकनान टात भ२ उयवा गेला । एतेक सुनि ले बहननि जे तवरी पसीनासँ पसीज पेतारिक रंग देहक घामक बीजन गोनगना कर्ता निकानितथि । आगनमे रँडकी-भोजी टुहि नग रँस भासम करैत प्रतोहूकेँ कहैत बहनि-

“कनिसाँ, भगवान जँ ससुर देवनि तँ अहाँकेँ देवनि, अपला ए रूठ ाड ी तक पहुँचैमे कहियो खाँग-पीरै आकि कोला मस-मलावथक दुख रँकन नहिखै भेन अछि ।”

मासुक (रँडकी-भोजी) रात सुनि प्रतोहू (बेथा) जे तिनकोवक पात डाँष्टि-डाँष्टि तहिया-तहिया मासु-ससुर जेन बाथि अपना-जे जोहियामे देन उँठरँजे जेननी दिस आँथि उँठरैत रँजनि-

“कहै तँ छथि रँड सुन्नव रात माँ, दूदा गाममे हिया क२ देखथुं जे हिका एते उँमेवक कते गोठे घबक गावजनी अगना हाथे टुहूँ क२ पकडल छै । खाँन-पीअन पोसन देह छुनि लोकवनी जकाँ बथल छथि । ज कहाँ कहियो मसमे हाँग छुनि जे पोता-पोती रिआँह-दुवागमन करै जोकव भ२ गेन । अपला उँमेव पचास-पचगनक तँ भेये गेन हएत दूदा हाथ-दुष्टी केशा चले छै मे मोटे-रिटावैक मोका अथेस तक कहाँ देवनि । जहिया दुवागमन क२ एँ घब धरेशे केरौ तहिया अथला जी । पाकन आम जकाँ दूनु रँकती भेली, कथन ठम दे आँथि दूनि जेती तेकव कोला ठीक छुनि । किछ दिस पछाति रँषा-प्रतोहू घब संभवत । तथन यएह कहथुं जे हिका जकाँ कहिया हएँ ?”

अपन मनिकियतपव प्रतोहूक रंग्यराणक आँफना देखि रँडकी भोजी तिनकोव उँठरैत प्रतोहूक रौन सुनि तिन-गिनाँ नगनीह । टोठ सँग जकाँ मस मसकए नगनि दूदा रिटाव लोकि मसमे उँठनि, घबरानी घब जेती दाँग जेती छुछे, तगले मरुड-मरुव कवरँ नीक ले । टासि पएवक हाँथि दूनि जाँगए मसथ तँ सहजहि दुँगये पएवक हाँग छै । आगिक ताँ नग मस तरँसि गेन हेतनि, भिसक तँ ए एहेन रात रँजनीह । दूदा नगले रिटाव घुमि गेनि । एहेन रात प्रतोहूकेँ रँजक चाहियनि । एतरौ ले होशि बहननि जे दूहपव एहेन रात रँजनीह । घब-दुआव केतो पड एन जाँग छै । एहेन उँटित भेन जे पाकन आम जकाँ रूँने छथि । जिणगीक कोला ठेकान छै, जँ कही हमरासँ पहिल अपन चलि जाथि तँ पोत-प्रतोहूक गावजनी केहेन हएत । जौड १-मावडाँ क गावजनी आ पछुआ मागक मोवमे की भेद छै । दूदा किछ रँजनी ले । मजवि दूनुक तिनकोवक तडु आँपव, एहेन ले हूँए जे कोला नहकि जए आ कोला अमिनु भ२ नवमे बहि जए । एक हूँमादावनी दोसव केनिहारी ।

रँडका-भैयाक असन नाँ सुनोचन आ रँडकी भोजीक शोषती छियनि । परिवारक रारी समाजक भेयारीमे सुनोचन रँडके भैया आ शोषती रँडकी-भोजियेक कपमे बहि गेली । ओना दूनु रँकतीक उँमेव अससँ उँपलेक छुनि । दूदा उँपवका खाँड ीक नाँथेमे धियो-प्रतो रँडके-भैया आ रँडकिये भोजी कहै छुनि ।

सुनोचनक पर्गक मचमटीक अँराज आँगन धरि पहुँचि दूनु रँकतीक काँमे ओहिया पहुँचन छन जहिया मनकाव िकमान परिवारमे रीधसँ अँरैत मान-जानक आँराज अँरैत । अँकानि-अँकानि अँवमान नगोननि जे भिसक रूठ १ पहुँचि गेला । अँवमाना ठीके बहननि ।



रैडकी भौज्जी लेखामँ रैमी पणिगव । देहो हवन्नक । तँ जारै लेखा भौज्जी बाथि पन्था समहारि दूनु हाथ रोणि उठैत-उठैत तारै रूठ्ठी (रैडकी भौज्जी) तीनियेँ डेगमे पति-रैडका-भैया नग पहुँचि गेली । पहुँचि ते आँधि मुनि टाकनाम छीत, दूनु हाथ सिव्या दिस रैठ्ठी ले देखि अर्छतेत जकाँ हूअ नगनीह । दूदा हाशे सन्हावि दलिना हाथक आँधव नाक नग भिलौननि । साँस नीके चलैत बहनि दूदा बसूतक नमावसँ किछु गवम तँ बहरै कवनि । पन्था लोकनासँ भक्क धुँष्ट जेतनि । पाछु उलठैत तकनीह तँ डाँडगव हाथ लले लेखाक मोकणी हाथी बर्हाति ब्रदुव-ब्रदुव अरैत देखनि । नग अरैसँ पहिलहि जेससँ हूअम हकननि-

“कनी पन्था लले आँड ।”

एक तँ वाकसि दोसव नतन, दस डेग आगु रैठरसँ लेखा हूअमेकेँ नीक रूअननि । घुमि तँ गेली दूदा मस रिमागल जकाँ हूअ नगनि । जत रिय-रिसनी रैठन जाहि तत मसक लैव मेहो तेज होगत जागत छनि । ग केलेन भेन जे लेनसँ देखेक रैदना पन्था अलेले घुआ देननि । भनहि डाँकठव ले छी दूदा डाँकठवक परिवारक रैषी तँ जीहे । पठन-लिखन जीहे, तखन किअए रूठ्ठी अगटंग भेन छथि । एक तँ रूठ्ठी खेनाड जे एत दुवसँ पएले एना से भेननि दूदा रैजितथि से ले भेननि । लोककेँ कोना रैमावी होग छै तँ रैजेए आ हिनकव पहल रैकाले रैम भ२ गेननि । तेहल खेनाड रूठ्ठी छथि । जना नुष्टि लेतिथि तलिना दूवसेमँ हूअम चना देननि । हमसँ रैमी पणिगव तँ अगल छथिये किअए ले दोग क२ पन्था न२ गेली । मस ठमकननि । पवरस ज़ीर... । मसमे ठहकते लेखाक सभ रिटाव, पाणि पडन मोनीक आगि जकाँ सिमि गेननि । जँ राँत कठितथि तँ पीरि त-सँ-रिगवीत भ२ जगतथि, जँ ले कठितथि तँ रूठ्ठीक जाण-पवाण निकनि बहन छथि । अज़ीर नीना रूठ्ठीक छथि । हडपठाहि गाए जकाँ, दूधक कान छुलि उठती आ डोवी तोडाँ आडाँ - धुव हदि क२ ठपे रैव खनीया भ२ जेती । गहए छी परिवार राँरा-दाने, राँरी-दाने, दीने-पीसा, मोसी-मोसा, काका-काकी, भाय-भौजागक समरूषक कोना महत ले, दूदा... । कतए रिना गेन राँरा-दानेक समृति थप, जे पेठ-काँठि उँगारिंत केले बहथि । उँटित-अवृटित जिणगीक दिशा रैोध कवरैत अछि तगठाम मँ रैनि ठोनक-मानिक मंग हरामे बसेत बह छै ।

पन्थाक आदेशे पुतोहूकेँ दैत रैडकी-भौज्जी काण नग दूह सँ क२ पुछनथि-

“किछु खेरौ-पीरौक मस होगए ?”

रैडकी-भौज्जीक आराज काणमे पेसिते ठोठ साँप जकाँ रैडका-भैया हूअकाव भौडननि-

“की खाएर की पीर, अह्नादि क२ पुछे छथि, रैड हएत तँ यए ल हएत जे एते दिस छानि-छानि खाग छुलौ आर माडाँ-माडाँ खाएर ।” तले-तव जे रैडका-भैया रैजेत बहथि से रैडकी-भौज्जी नीक जकाँ ले सुनि पौननि । अह्नाद-सँ-अह्नादित होगत हाथीक सुठ जकाँ मजीवाक धरनिमे रैडकी-भौज्जीक गडाड देखि रैडका-भैयाक मस सुगरूगेननि । रैजनाह-

“कनी थमछ । आँधिक पन उँठरै ले करैए ।”

भक्ति भारसँ रैडकी भौज्जी धड-हड गत रैजनी-

“अच्छा, पाणि आनि आँधि पौडि दग छी ।”



कहि रँडकी-भोजी जूखानीक जोगीमे पनगसँ कुदि पाणि आषए दोगनीह । टोकटिक अठमे
 पुतोहू-रेखा पंथा लल अरैत बहथि, अकाममे उँडत रँडकी-भोजीक नजबि लेखापव ले पडननि ।
 एक गोठे अमथिवसँ अरैत दोसव फुदैत-फुदैत शिकलैत, मोथे नग भिडत भ२ गेननि । कोला
 एक-दोसव परिवारक भिडत ले तँए ल रँडकी-भोजी किड रँडनीह आ ल पुतोहू-रेखा । मस दूनुक
 ठाँगन रूठक कोमनपव । चनचनौ जकाँ छथि, अखल जे पाणि जेर से पाणि जेर । रूठक (रँडकी
 भोजी) धडफड देथि लेखाक मसमे उँठन, शोभत-चित बहरना रूठ । एषा रिसमृत जकाँ किखए क२
 बहना अछि । जमिकामे एते दूवसँ अरैक शिकति छननि दूदा घबक लोककेँ कहितथिष से होशि ले
 बहननि । जकब कोला बाजबोग छिननि । (बाजबोग उल्ल रैमावी होगत जे जर्जा-मुन ले छुठैत
 दूदा पथ-पवहेजसँ जिनगी देल बहैत अछि ।)

बाजबोग मसमे अरैते रिटाव फुद-फुदए नगननि । जहिया छुठी वातिक दूष जिनगीक अतिम
 ऋष धरि स्यावण बहैत, जेकब सफब जिनगीमे सतसँ नमहब होगत छै । किड बोग एहला होग छै
 जे चठपठ जिनगीकेँ तोडा दग छै आ किड एहला होग छै जे दूसकावीक मुस जकाँ फहि-फहि
 जिनगी नग छै । भविसक रूठहोकेँ ल सएह पकडा जेनकनि ।

दूष जकाँ मस दूमिया गेननि । उषा जखन दूनु गोठेक (साम्प-पुतोहू) काषमे रूठक पहिन
 धरनि एननि तखन दूनुक अण-अण उतुमाह बहनि । रँडकी-भोजीक उतुमाह बहनि जे बाज-दवरीवसँ
 घुनानहै । नीक जकाँ परिवारक रिदाग भेले हेतनि, देखा चली टागल केहेन चाकेए ।

जारे लेखा कोठवी पहुँटि रूठ । नग रैस किड पुठेक उरियाण करिते बहथि आकि रँडकी-
 भोजी कोठामे पाणि लल पहुँटनी । मसमे शिका जगननि । शिका जे रूठसँ किड कहा ल लल
 होथि । दूदा रिस स्रगन रीत रीजरौ उँटित ले । तदुमे एक दिस मालिक (पति) छथि दोसव दिस
 पुतोहू । जँ कही दूनु एक दिनाह भ२ जाथि तखन अण गति की हएत ? गाडी उँनाव भेले
 चठनिहावक जाण खोचरे रँटे छै । जँ रँडकी करे छै तैयो अरौह रँगागये दग छै । दूदा मसक
 ताप-सताप रँगले बहननि । पुतोहूकेँ कहथिष-

“कनिसाँ, अहाँ उँच्छा घुँरी एँठ दिखिष ।”

घुँरीक भाव देना पछाति रँडकी-भोजीक मस बमकननि- ओह, नगले दोहवा क२ अठ एरँ नीक ले
 तदुमे तीण गोठेक रीचमे । ले तँ कडू तेनसँ तवरी बगडरँ नीक होगतनि । पाणिसँ टाणि धूखा
 जगतनि आ तेनसँ तवरी बगड । जगतनि तँ अलले होशिमे आषि जगतथि । खेब, जे दूसन से
 दूसन । टाणिपव पाणिक फुहार पडा ते रँडका-भेया आँथि खोनननि । आँथि-पव-आँथि पडा ते
 रँडकी-भोजीक आँथिमे ननकावीक लेगल जगननि । जगिते सननि गेनी । अलले रूठक डीमे घी-
 ठावीक रीत मस पाड छी । लोककेँ अणला उमेवक ठेकाण कबक चली । दूमियोँ तँ अजारेँ छै,
 दूमियाँक एका प्रतिभेत लोक एहेन ले अछि जे अणल माए-रँलिन जकाँ दूमियोँक माए-रँलिनक चर्ट ले
 करैत अछि दूदा एह अणवाध किखए होग छै । लैतिकताक महत जँ ले होगते तँ माए-रँलिनक
 अणवाध कहाँ केतौ होग छै ।

पतिक थवथवागत मस छाती डोना देनकनि । पँजवा उँच्छा तकनीह तँ पुतोहूकेँ उँच्छा घुँरी
 जेव-जेवसँ सनावेत देखनीह । दूदा शिका भेननि, शिका जे जकब कोला रीत हेते । रूँछिवाव
 आदमी काजे देथि आदमी चिन्हए । जँ कही घुँरीये पकडा योनष्टिया जेनकनि तखन अणल तँ रीचमे



बहि ज़ाएँ । पुरुखक ठेकाल कोण । साँठ-पवा ज़काँ कखन की कबत तेकब कोण ठेकान । कखला भगत सिह रँनि ज़ान फुकत तँ कखला रेभियातयमे दिला-देखाव बूँत-बूँत । मल पड़नमि घी-ठारिक मत्र । दूदा आँ ओ मत्रिक समए कलँ बहन । गाडुपव मँ खसत लोक ज़काँ भोजीक मल नुगनमि दूदा थाकन ठेहिआएन पतिक सेराकेँ प्रथम प्रिय दैत अपन रेखा रिसवि भोजी पति (रँडका भैया) केँ कहनथि-

“लोककेँ सौमे देह गूड-घा बहे छे से रँवदास क२ समेपव नहेरै-खेरै करैए आ अहाँ दूवदा ज़काँ आबो पड खसोले ज़ाग छी ।”

भोजीक रात भैयाकेँ कठानि ले नगनमि । पुरुखपाणा ज़गनमि । मरितो धरि पनी नग नुकि ज़ाएँ तँ केहेन पुरुख हएँ । फूडफूड । क२ टिड ज़काँ, उँटि रँस भोजीकेँ कहनथि-

“कनी हवताक रँम थोनि दिख ।”

“एलिा उँनठा-पुनठा रूने छि ।” नगठैत पतिकेँ भोजी कहि लेखाकेँ आदेशे देनथि-

“गहिले पएवक सैतारा कनियाँ निकानि दिख ।”

ओला रँडका-भैया वगा कपेयाक दूसकी देनमि दूदा मलमे उँटि गोनमि पनीक रात ‘उँनठा-पुनठा काज ।’ दूदा रँजनाह किछ ल । सब रात मूगण नग राजरँ उँटित ले । जँ ओकवा नाक ले बहिते तँ कि-कि ल करैत । दूदा डाती बाँग-बाँग भेन ज़ागत बहनि । हवताक रँम थोनिते रँडका-भोजी बाँग-बाँग भेन दूदए देखनमि । रँजनी किछ ल । देह खनिआगेते रँडका-भैया रँजना-

“कनी जेठबीला जैतेँ आ नहागयो जैतेँ ।”

एक बाकमि दासेव लातन भोजी आदेशे हकनथि-

“कनियाँ, अहाँ टोका समहावक हम राथ कप समहावल अरै छी ।”

दूनु गोठे मल सानुओ आ गूतेहुओ अपना-अपना मल खूनी जे खेरै कानक गप ल बस पारि मिठासपुर्ण होग छे । दूनुकेँ खूनी देखि रँडका-भैया खूनी । परिवार खूनी तँ अपला खूनी । जँ खूनी ले तँ रँजाव घुमेकान ओलिा राप रँथैकेँ आ माए रँथैकेँ कोवामे न२ घुमेत बहे छे ।

कोठबी जोडक रिटाव तीनु गोठे करिते बहनि आकि शिरशकव पहुँटि गोनथि । किलको नजेरौक प्रम ल । रँडका-भैया रँडके-भैया भेना, भोजी भोजिये भेनथि आ लेखा अंगीतेक रँथैयो आ काँलेजक रिगारियो । कोठबी प्रनेमि करिते शिरशकव पुँडि देनथि-

“भाय, केहेन यात्रा बहन ?”

जलिा दूदा उँपव अस्मी मल जावनि नादि ज़वाओन ज़ागत तलिा अस्मी मल पानिये दूमान रँडका-भैया मिवमिवागत कहनथि-



“अशुभे बहन ।”

तेयाक रात सुनि शिरशेकव रजनाह-

“पहिले ह्रेस भ२ जाड, नहा-था निख तखन निचेनसँ आशुक गप हेते । तारे ह्य रैसै छी ।”

शिरशेकवक मसमे बहनि जे नर-नर बचना अलल हेता, सेहो देख जेरँ आ दर्रावक कागजो-गतव देख जेरँ । एक्क रसुतेकेँ एक सुतवसँ गिबोनापव अलक तबहक दर्राव पडै छै । अशुभिसँ गिबोनापव नवयो रसुतेकेँ रैटेक संभारणा बह छै, जखन कि जेवसँ गिबोनापव कड । रसुतेकेँ छुँछै-फुँछैक संभारणा भ२ जाग छै । रडका-तेयाक स्थिति सएह बहनि । ह्दा दर्रावो देरँ उँचि त लेँ सुनि शिरशेकव दूपे बहनाह ह्दा बेथकेँ कहनिथि-

“पाण सए नमरँव जर्द देन पाण खुआ दिख । एक नपकी तारे यावि जेरँ ।”

जते काज रडका-तेया आ पा घँठामे करे जनाह ततरे करेमे घँठेसँ डुगव नागि गेननि । जहना पएवमे जात राहि रा जहनमे उडा-रेवी... ह्दा से शिरशेकव लेँ सुनि सकनाह । कावा तेननि जे बेथा काजेजमे खेन-ह्दमे नमरँव एक डन आग उँठरौ-रैसरौमे अमोकर्ज भ२ बहन डुगहि । मसमे उँठननि अखवाहाक खनीफा पहिले डण्ड-रैसक क२ नपठैए, तखन कश्ती नडैए आ तेकव पडाति छेँछेँ खनीफाकेँ नपठारैए । पडाति सरावी कसि पबिष्ठा नगए । जिनगीयोक अरसुथा अलिा हाग छै । रडका-तेया एमे दूकनाह । भोगी-रिनामीक परिवार रँगा जेननि आ आशामे जीरै छुनि जे चाणक पाडी नगोल छी । सोचिते-सोचिते आँधि रँग भ२ गेननि । तहखागत गुंया गेना ।

रडका-तेयाकेँ पडैचिते रडका-बोजी पनरंछी लल पडैचि गेननिथि । दूनु गोठे पाण खेननि । शिरशेकव पडननिथि-

“अशुभ की कहनिथि ?”

शिरशेकवक प्रश्न सुनि रडका-तेया नयाण भ२ जेना हजारा हाथ डुगवसँ खना-

“मिसियो भवि जेकव आशि लेँ डन से तेन ह्दा... ?”

खेतक अकठो-मिसियाकेँ कियो अल माणरे ल करेत तँ कियो मागो आ बोष्टियो रँगा खागत अछि । खोती तेनहि लेँ होड ह्दा ओहो (अकठो-मिसिया) मेदानमे उँठन अछि । जँ कनियो नजवि लेँ बाखरँ तँ जजातेक छातीपव चर्डी धवतीकेँ अलमाडन रँगा देत अछि । रँष्ट-घाँष्ट लोकल तीर्थ यात्रीकेँ किडु लेँ रिगडैत छै, देखे-सुलैक नर-नर सुथान तेठैत छै । यानिओ रा लेँ यानिओ समैक शक्ति सरँन हाग छै ।

रडका-तेयाक चेहवाक फिया देखि शिरशेकव सोचनि जे चेहवा कहि बहन डुगहि जे जना धमसुवक छेँ नगन हागहि । जठो-जठोणक रँगकेँ जहना कश्ती कुँष्ट प्पेठसँ पाणि निकालि पाणि क संग ह्दगन रँगकेँ मठकवसे लल गीत गरैत केकवो एँठाम ह्दक भवि दिन ह्योतनी सुलैक वासुता रँगा लेत तहना गमिया क२ शिरशेकव पकडननि । ह्दा मसमे अहो होहि जे धमसुवक छेँ कनियो



सुनि दुनु गोठे मर्हात भ२ गेना । ऋदा दुनुक मसमे दु तबहक रिटाव बाटा नगननि ।
रैडका-तेनाक मसमे उठैत बहनि जे ङा उमेव सन्नासक छी । हमरा कोष एं दुनियाँ-दाबीसँ मतनरै
अछि जे अलले... ।

शिरशेकबक मसमे उठैत बहनि जे जाधरि मसमे ले पकडि चनरै तधरि मसमे संग ले चलि सकरै ।
रिक्तमोक प्रफिया छै । ओहीमे गति-मति संगे चलै छै । से ले भेल ।

(“रैवजोव” कथा अ. प्रेम शैकव मिहरेँ समर्पित...)



दोसती ले खबे

मतिङ्गि जकाँ भेन दवरैज्जाक खूँमे उगटि अगल कवनीक हन देखरौ करैत बही आ अगिना हन दिस तकरौ करैत बही । दूदा मल केतो खेरै ल कबए, केतो-कतो दुमियो जाए तँ केतो-कतो रूमि पडए जे सद्दक कातमे नहर्क क संग राबुपव दुमि खेले डी । गाम दिस ताकी तँ देखिँ जे गोसाँग भायकेँ मोसे गामसँ दोसती निमहि बहन दुनहि दोसव हमा डी जे न२ द२ क२ एकठी दोस खेनाग-पीनागसँ न२ क२ रव-रबिखाती पुवनाग धरि दुन, मेहो चलि गेल । ओह ! अलले मगड । क२ अगल संकनग तोड़यो । एँ ह कछु जे अ केहेन भेन जे जग भोना रैठीक केने कठरैए गंगा कात गेल बही आ केने कठैना पछाति डोड़ केँ अमीबरद देल बहिँ जे गान मान पछाति रबिखाती पुवि रिखाहो क२ देखौ, मे तँ धूँठि गेल । भोनरौ मगुत खा जेनक जे तोवा दुखावपव खुक ले अकरो तलिा मोकमे अगला तँ कहिये देखिँ । नाभ-हामि तके डी तँ एकठी दासे दुन मेहो चलि गेल । अमकरे जलिा पुकथक यव तलिा ले योगियोक होग छे । ओह, अलले एहेन मोकमे पडयो, ओ जँ रँजरे कएन तँ पछाति रूमा दैतिँ जे मलक कोला ठेकाष छे ओलिा दूहसँ निकलि गेल तगले दोसती किअ चलि जाएत । भेन तँ एतरे ल बहए जे ओ माँठिक तबक अकुआ-सुथनीकेँ हन कहि एकादशीक रात कहे आ हमा आम-जादुनकेँ अकाम हन कहि एकादशीक रात कहेत बहिँ । अलले रातक वगुड-मगुड रँमि मगुह क२ द२ आएन । रूकोड़ नलि गेल जे अमकरे गाममे केना बहरै ? जग गाममे जाति-जातिक वगड । जाति-जातिक रीट कुन-मुनक वगड । कखला ठक-रिनु ठकक वगड । कखला वाम-प्रयुक्त वगड । तँ कखला एँ ठेन ओग ठेनक वगड । केना एहेन समाजमे अमकरे बहरै ।

जलिा राँह छूँठल रा दुहव छूँठल राठि क पानि यनेकेँ दूमा दैत आ यवमे रैसन यवरावी यवकेँ बकक रूमि भकक भ२ जागत सए गति भेन । दूदा गरिवाला जे धनिकाहाक देखनी-बस्ता पकडत तँ कते दिस चलि सकत । मममे उठन जे जारे अगल दुख दोसवकेँ ले कहरै तारे एलिा हएत । दूदा कहरौ केकरा करै । डोगी नारमे रैमा डगमगा क२ दुमरैयेरैना रैमी अछि । नजबि उठा तकयो तँ मंगन ग्रह जकाँ गोसाँग-भाय जोड़ि दोसव कियो ले रूमाएन ।

गोसाँग भाय सकुनक संगी । गोष्टि-गुड । जे पुवाष लोक दुधि ओ अगलाकेँ पुवना सीमा रँना जेनमि तलिा नरका तुव नरका सीमा । कावणा भेन शिखाक रँदनार ! दूदा गोसाँग-भाय तँ एक रँतबिया दुधि, हुकसेँ पुडरै नीक हएत ।

रिदा भेजौ । गोसाँग-भाय हमा गिवगिष्टिया कहे दुधि । जखन रँजे डी तखन ठीक-ठीक कहि दैत दुधि, दूदा वंग रँदलेकान सतवंगा कहि गिवगिष्टिया कहे दुधि । संगी-साथीमे अलिा होग छे । राँहपव देखिते गोसाँग-भाय पुडनमि-

“की गिवगिष्टि भाय, सुले डी अछु रँव गलेकुमि हएत ? ”



३.३९. जगदाशुद सा 'सुनु' गजुन ९-४ 2.
डुगरती गीत ९-२/ करिती ९-२/ गजुन ९-१



गंकज टोथरी "सरनश्री" डडि गजुन/



३.४९. कानिनी कानुगनी- आशुतुक डुी कवने २.
जुगति सा टोथरी- गिया कुवनी सँ आड ल (रैलेष्ठागुन डे डव रिशेय)



रिनीता सा- टैन ३.



३.३.९. राजुदेर माडवक ड लोष्ट करिती २.



जुगदीने शमाड माडवक डु ठी गीत



३.७. राजु कुकुडु डुठक- गजुन ९-२



३.१९. बिनुदुशेव ठाकुर "लुगानी"- श्लेग / गजुन २.



सुगिति मिशि- गजुन ९-२



९. रामकुशुन साहुक डुठी करिती २.



हेम नावाशुन साहु कुक करिती

९



रामकुशुन साहुक डुठी करिती

रामकुशुन साहु कुक डुठी करिती-



झीयरँ केशा

झीयरँ तँ झीयरँ केशा

दूमियाँ रँदनि गेन जेना

टाककात अंधवमे रुकवमे

दिस-दहाले डाका गडैए

टोरैष्टियापव गज्जति बृष्टागए

गाम-शिवमे दारु रिकागए

माणर पीरँ दामर रँलेए

टोबी-डाका सिनाजोड ी करैए

रीट रँजाव रँनतुकावी होगए

कतए चलि गेन धरक नीति

जेनए देखियौ रुबितिये वीरि त

झीयरँ तँ झीयरँ केशा

दूमियाँ रँदनि गेन जेना ।

टलेत रँष्ट डव नलैए

टोव सिगाली खेन करैए

सबकावक कानुन उँल्लै रँननए

नि नदोयी जेन जहन रँननए

दोयी घुमि-घुमि मोज करैए

सबकाव अणवाधीक रीट



गवीरँ जलता पीसागत बहेए
सभ हत्यावा कर्म रँगलए
सबकाव धृष्टबायष्ट रँगलए
अधिकारी मंत्री मान ब्रुष्टेए
देशीक जलता रौक रँगलए
देखि करि मोचमे पाड़लए
ज्जीयरँ तँ ज्जीयरँ केशा
दूमियाँ रँदलि गेल जेना । ।



मोषक आगि

पुर्णियाक टास मनिष भेन
देथि तलेगल कनखी मारए ।
सोनह त्रुंगाव काएन
भेन मजिष ।
पिया रिस्र भेजौ रिवहिन
बातिक हुन भेरे भेन मजिष ।
मृग भ्रुषामे मृग रौआगए
भठकि-भठकि जलिषा पवाष गमारैए ।
तलिषा मल हमर भवमैए
मोष आगि बहि-बहि जड'ए ।
ले पिया पियास क्रुमागए
सोनहकनासँ सजन टासकेँ
जलिषा अन्हवा ले देस्यैए
तलिषा पवदेशिया पिया
अगनाकेँ रिवान बुँस्यैए ।
निवदैयाकेँ प्रेम केना जगते
प्रेम रिस्र दुनियाँ केना चनते ।
की चकरौ चकरौ जकाँ



माँस पड़त रिड्डा पड़ते ?
पूर्वमाक चन देखि बाति रितेते
कहेए करि बाखु मोनमे धीबज
एक दिन मेठेत अमृतसँ पियाम
अगल मोनक आगिकेँ बाखु दाँ रँ ।

२



हेम नारायण साहू

हम छी मैथिल-

हम छी मैथिल हमर छी मिथिला
मिथिला हमर गाम छी ।
हमर अगण धाम छी ।
किएक एकवाँ रिमवि बहन छी
एँ माँष्टि-गामिकेँ छोडाँ पड़ ।एँ बहन छी ।
एँ तूमिकेँ सद्गुटाँ जगमे नाम जल्पेए
संभावक लोक जय-जय गान करेए ।
मिथिलाक सत्ताता-संस्क्रतिकेँ
किएक रिमवि बहन छी ?



अर्थात्मक लोक-गाथा

ठोहि पाछा कानि बहन छै ।

कतए गेन जठ-जठीन

ओ मझी गीत... ।

गामक गली-फट्टी गरैत छन कहियो

कतए गेन अन्हा-कदन ओ लौकिक नाट

जे ठेहूँनिया द२ मटपव ननकारैत छन ?

रिना गेन महवाग केव फिस्मा

धर्मबाज सन धर्मात्माक भक्त

हबिया जेम सन भक्त कहरैत छन ?

रिग्न कोणा भेद-भारक

भक्त केव घब भोजन करै छन !

रिसवि गेन सत दिना-भदवीक गाथा

रिसवि गेन सत दूहवमनक गाथा

कतेक पिमारी मिथिनाक संस्कृतिक गाथा

मम पछैए तँ दुखागए गाथा ।

अँ माह्रभूमिक संतान भ२

माएकेँ छोडा किअए पड गे छी ।

हम छी मैथिन हमर छी मिथिना



किअए एकवा रिसवि बहन छी ।

ए बचनोपर अणम मंतर ggajendra@videha.com पर पोछाड ।



१. आशीय अणटिहाव-गजमर.



अ. गिर क्यार प्रसादक दुष्टी पीत

१



आशीय अणटिहाव

गजमर

मोहितसँ छै रँगन लोव हमार
भेलै हँसी तँ अंगोव हमार

हम तँ छी आरि सँमक भरोसे
गीनाम भेन छै भोव हमार

हम देखलै किअ दोसबक दिस
तोली तँ डहक टितटोव हमार

कोला सुवाव लै देशेमे छै
लोक तँ रँड्ड कमजोव हमार

बाँठक हिसार लै गुड मीता
दुष्टि जोन आरि संजोव हमार

दीर्घ-दीर्घ-नघु-दीर्घ+ नघु-दीर्घ-दीर्घ+ नघु-दीर्घ-दीर्घ हलक पाँतिसे



२



अ. मर क्मर प्रसादक दुषी गीत-

सर्गक-सहायक प्राध्यापक (मैलेक्मण ग्रेड), हिन्दी विभाग, ए. प्र. सह महारिष्यालय, (फिर्माणी कांजेज फिर्माणी) फिर्माणी - सुपौल ।

रौखी केव उरैठन

कज्जरोठी केव काजब संगे

रौखी केव उरैठन रिना गेल ।

सोअरी केव अशौचक संगे

भावतीय संस्कार हवा गेल ।

रौखी केव..... ।

नर हागक नर संस्कारमे

जखमन रैरीक पाँडव छि गेल

मागक स्तन जोड़ी क२ लेना

रौतन संगे माए तुना गेल ।

रौखी केव..... ।

मिलहक डोबि तोड़ी क२ ममाता

सुन्दरता केव मोन रिका गेल

दाग लौकिक संग पाँरि क२



लना मागक शोक तुना गेल

रौंखा केव..... ।

अपन आन सभ पागपव रिक गेल

सम्बन्धक सभ आँट रूँता गेल

धन नष्क्रीक चकाटोँधमे

तन मन बागक बैंग मेष्ठा गेल

कजरोष्ठी केव काजव सँगे

रौंखा केव..... ।

सोहव जल्हा रँधैया सँगे

मुँडन उँगलिनक महत मेष्ठा गेल

नकदक गाड ी रसुत्राबुषामे

रँकखा केव आचार्य तुना गेल

कजरोष्ठी केव काजव सँगे

रौंखा केव..... ।



शेहव ँ गेव.....

शेहव ँ गेव मसुकुथ रैले लेव

गाममे बहि रैल-मासुथ डल

शेहवक पाथव केव जंगममे

सभकेँ सभ आग पथवा गेव ।

शेहवक पाथव केव जंगममे

सभकेँ सभ आग पथवा गेव ।

गाममे सभ डल भाए-रैलिस सभ

कियो रारु कियो काका डल

तेया-तेज्जी रैपी-भतीज्जी

ले कियो रिसु नाता डल ।

शेहवमे जागते रिसु-नाता

सभठी मष्टिगा-मेठ भ२ गेव

शेहवक पाथव केव जंगममे

सभकेँ सभ आग पथवा गेव ।

पथवाएव शेहवी पाथवमे

कल्लिको माणरता ले रौँचव

टावि रैवखसँ टानीस रैथ केव



लना-शरती रैनि चढ़ि गेल
शेहबक गाथर केव जंगनमे
सभकेँ सभ आग पथवा गेल ।

रौंठ-रौंठेली देखतो आनह
समितो कदम रैनि भ२ गेल
पशुतो एहेन ककर्म सुनि-सुनि
छूड़ूक पामिमे डुमि मरि गेल
शेहबक गाथर केव जंगनमे
सभकेँ सभ आग पथवा गेल ।

ई बचनपर अगम मंत्र ggajendra@videha.com पर गठि ।



१. जगदाशुद ना 'मल्ल' गजज १-४ २. भगरती गीत १-२/ करिती १-२/ गजज १-१



गंकज टोधीवी 'सरजशी' भक्ति गजज

१



जगदाशुद ना 'मल्ल'

ग्राम पोस्ट- हरिधर डीहठेन, मधुबनी

गजज-१

बहरि आरि ले दाम रैनि हम
अगम नीक गतिहाम जनि हम

जखन ठानहुँ हम अगमपर
सकदा जएहुँ तँ सनि हम



उँठा माथ जतएसँ तकनहूँ
दएनहूँ तँ नखत्र गनि हम

हनाहन दूनीयाँक पील
चले छी अगन मोष तनि हम

जमान खुन मावनक धरवा
नएनहूँ बिजय रिश्रि ठनि हम

(रँहने दूतकारिबँ, मात्राफम-१२२)

गखव-२

हकन लाव माए कले छे
तकव पत्र दूधिया रँले छे

कते आरँ रँमाष रँदले
गवीरँक छँका के गले छे

पतित रँगन लता तँ देशक
दूनु हाथ ओ मन सले छे

पएनक कियो जतय मोका
अगन रँनि कऽ ओहे छेले छे

रँगन लोकना जेठरँथति
दूदा मय तँ सतठी जले छे

(रँहने दूतकारिबँ, मात्राफम-१२२)

गखव-३



मन्त्रखक एहि दुनियाँमे कोनो मोन नहि बहन

हमरा जेन केकरो नग दुष्टी लौन नहि बहन

रँजाएँ कतए ककवा सभठी साज ठूँठगेन

हुन एकठा फुष्टन ओहो आरँ जेन नहि बहन

सभतरि घुमेत अछि मन्त्रखक भेषमे हुँडाव

घुकारै जेन ओकवा नग कोनो खोन नहि बहन

बातिक भोजन ओ विखाषमे माएक मोन अधीव

हुन हमर रौडीमे एकठा से उन नहि बहन

हँसत आ दूयागत बहए जतएकेँ लोकसभ

मिथिनाक गामेमे मन्त्र आरँ ओ ठेन नहि बहन

(सबन रार्पिक रँहव, रर्पि-१६)

गजव -४



हेध मोन हवथीत ठोत्रो मोहाग

ले रिन्न कावले मीठ ठोत्रो मोहाग

धिसगव भेष्ट नरकी कनियाँ गोलै जै

हाथक हुनकव मोनगव ठोत्रो मोहाग

जेरौमे जखन भवन कपैया होग

तहले महग मस्तक मोत्रो मोहाग

मिन्नव तूबकेँ नीक गदगव ममर्नग

सुन्नव ठुहिगव आरि थोत्रो मोहाग

भवि मन्दुक घव जाहिमे भेष्टै मोन

एहण घवक महकेत मोत्रो मोहाग

(रौहले हमीद, २२२१-२२१२-२२२१)

जगदानन्द मा मय

ग्राम पोस्ट- हविगव डीहठेन, मधुबनी



पंकज टोषरी "नरदशी" भक्ति गद्य/ भगवती गीत १-२/ कविता १-२/

गद्य १-१

१

भक्ति गद्य

द्वैत अर्द्ध परिवार माँ हे

ठोठ पर दूयाण माँ हे

हाथ पुस्तक कमल आमल

सज्जन रीणा तम माँ हे

भावती जय माँ भवानी

जग करे प्राणमाँ हे

बुद्धि रीणा रिकमेन सन हमा

माँगि बहनों त्रान माँ हे

एनाथ आमस जोत भागय

दुब हो अतिमाँ हे

"नरन" माँगत आव ले किड



पाँचि ङा रवदान माँ हे

*रँहले बगन / माताफया-२१२२

२

भगरती गीत १-२

१

ममतामयी माँ ममता दे तू

ममतामयी माँ ममता दे तू सभ कछु कजेशे मिठी दे तू

ममतामयी माँ...} २

डोनन लैया रिष खेरैया आशि तोले ठी रँचन मैया

जूमि कब देवी हाथ रँडा दे}२ भरसागव पाव नगा दे तू

ममतामयी माँ...

हम अन्नानी डानक भूखन माँ दानी तोव दानक भूखन

जीरणमे छे गोव अहबिया}२ माँ डानक दीप जड । दे तू

ममतामयी माँ...

पकम पारन होयत तन-मन धन्य होयत माँ ङा जीरण

सुतके रिषती सुनि ले मैया}२ रँम एक दवस त देखा दे तू

ममतामयी माँ...} २

२

हेयै जगजानी मैया रिषती त सुनियौ



हेयै जगज्जानी मैया क्लिती त सुनियौ
 रौंठा के दमो देखि } २ लेना ल ऋनियौ
 हेयै जगज्जानी मैया..

त्रिंछा सुमल न एतहुं शिबणमे
 तन-मन-धन सब } २ अहिक चरणमे
 माणर कथीन मैया } २ आव कथी अणियौ...
 रौंठाके दमो देखि..

जतय-जतय गेनिये रैह ठुकरनके
 दीन के कियो ल } २ कोव नगेनके
 आनि अहि रौंछन } २ पाथव ल रनियौ..
 रौंठाके दमो देखि..

अरुं ले सुनरौं जँ दुखनामा
 आन के सुनते } २ कछु ककवा माँ
 कहिया हवरँ दुःख } २ आव कते कनियौ...
 रौंठाके दमो देखि..

हेयै जगज्जानी मैया क्लिती त सुनियौ
 रौंठाके दमो देखि } २ लेना ल ऋनियौ
 हेयै जगज्जानी मैया } 3



३

करिजा १-२

१

श्रेयक शोच ! !

टनी कर्तव्यक पथ पव अरिचन
रैनी श्रेयिक श्रेयक सकोव कवी
सतोष बहए संग जिऊशि
जोत-आ-द्वयक प्रतिकार कवी ।

कवी कर्म सतत ले किछु रौधक
अथाप्या प्राप्ति कवी रैनि साधक
रैस श्रेयसँ सफल कवी ज़ीरण
सत स्रग्न अगण साकार कवी ।

ले त स्वथसँ रैनी लेह बहए
ले दुःखसँ दूरकन देह बहए
टिता जोडी मित कवी टितन
सघर्य सहर्य स्वीकार कवी ।

टलि कान संग रैनी कानरिजगी
संग छुष्टत पाछु बहि जाएरै
जै श्रेयसँ देह टोवाएरै त



एहि कानक धावमे रैहि जाएँ
झग भवि लै राखेँ नश्रु होए
झग-झग के एहन जोगाव कबी ।

सभ लेख रिधि केव ठलि जाएत
श्रमसँ भाग्य रैदलि जाएत
थीटा भाग्यक लेखा पुनि
आ श्रमसँ स्वर्ग श्रुगाव कबी ।

२

हमर देसे पब-गन्ती-सीन ! !

जेमरुव देखु रीने-रीन
हमर देसे पब-गन्ती-सीन !

झुप्राटाव उँजागव भेन त पौखरिसँ रैठि सागव भेन
आठकक से पक गडन सभ छै रैनिक ढागव भेन
फुमि रैजे त ठेहूँ-ढारौ जे सट रौजन रौगव भेन
कतवि बहन छै सभके जेरौ थकी खादी आव रकीन ।
हमर देसे पब-गन्ती-सीन !

जमता आगाँ छुड मोहावी लताजीक छुनि भवन रैखावी
सबकालेक भाग जलौ छै जँ रैनन योजना कोला सबकावी
पाँट रैवथ धवि फर्मीक माया मतदाषक रैव खोजगुडावी



निर्धन नाचावक ले पूढत खँटेत-खँटेत छै ठोअी अीन ।

हमर देशे पब-गती-सीन ।

बिया कँठ नागन की कबते ठोका छापि कतसँ अणते
सभठो खेत जँ एखल गेलो रौकी बिया लेव की गणते
लावसँ बीजन माएक आँचबि ब्रुका-ब्रुका कते ओ कणते
बिया रौपक डीह बिकेलो रौवक रौपक मोड़ । सीन ।

हमर देशे पब-गती-सीन ।

घुसे पब काँटे घुसकनिया करिया धन सभके चाली
दनमजित छै दन-दनित संवक्षण सभके चाली
प्रतिभाक प्रतिकार कबए आवक्षण सभके चाली
ब्रथा कथा ले कहते ककवा सगब ब्ररन्दा मोहबन पीन ।

हमर देशे पब-गती-सीन ।

४

गज्जव-१

सगतबि रौखान मिथिना ले

महिमा महान मिथिनाले

छुधि बाग सज्जन रौमि दूला

छाती उतान मिथिनाले



पाहून्सँ तबल अछि आँगन

दमयल दनाष मिथिनाके

धूमल गगुल शेरैत आ

गवसरैग पाष मिथिनाके

अरधेशे देखि गदगद छुथि

सभ ओबिवाष मिथिनाके

अविगल गडल सजल डाला

देखरै चूमाष मिथिनाके

आओत 'नरन' कोजगवा

रैठैर मखाष मिथिनाके

रर्षि एमः २२२२+२२२२

गज्ज-२

जग तबिक ँगवागसँ अकछ तेज छी



बाति-दिस नाछीत दगसँ अकछु भेल छी

मोष झूठ पब झूदा मोष महुँ भवन

एँ हूमियाहा अब्बागसँ अकछु भेल छी

हम जँ रँजरोँ अहाँसँ त कमि बहता ओ

एँ सँरिधक गुणा-भागसँ अकछु भेल छी

दमे सहरोँ कते मिया भावि मोष जेन

प्रेमक महुँ पवागसँ अकछु भेल छी

‘नरन’ छुँछुँते ले जे मिय होएते एहन

बाति-बाति भविक जागसँ अकछु भेल छी

***आख-१३**

गजब-३

सभसँ डुंगव दमे भावत

जगसँ सुखव दमे भावत

झूठ परित हिन्द चषाहि

छै कमांगव दमे भावत

माय माणी माँछे के सभ



ते हिनसगव देसे भावत

धर्म सभ्ठा जाति सभ्ठा

रैड दिनसगव देसे भावत

अपण अन्नक रैन भरे छै

शेठ अन्नकव देसे भावत

सहर ककरो यातना ले

अरि रैनगव देसे भावत

ठाम सभके माण सभके

"नरन" नमहव देसे भावत

>रैहले कान/मात्रा एम :२५२२+२५२२



गखन-४

"गांधीजी"क धवती पव रँहलै शोषित केव धाव कोणा

"भगत सिंह" केव अँगणमे जलमल अवाटाव कोणा

कतए गेलै "आजाद"क नगरी कमि "नफ्फा" कत पड़लै

देर आ रिद्वानक नगरीसँ रीना बहन संकाव कोणा

रिसवन-रिनठन छै अगलैती मानरीय-मोनाशा के

जाति-पाति आ भेदभारक पमवन एते रिकाव कोणा

आरि लै जलमे "नाम" किअ की देशक माई भेलै उम्सव

जोती-कपटी-कर्मि सभके नागन एते पथाव कोणा

ल लत ठीक ल नाम नीक ठीका रँन पव लता रँनलै

करै ओसुनी जलता सभसँ चतवन अज्जाटाव कोणा

मतके माण रीना रँमले रँव-रँव मतदाण केनहुँ

मतके माण लै रँमरँ जा जागत पम सबकाव कोणा



छोडर ले अदिकाव अपन हाड रौहि नी चवु "नरन"
रिषु मंगल ले तीख भेठै भेठैत ह्येव अदिकाव कोषा

>आखव-२९

गजव- ३.

थीत रँनि क हियामे बहरें कवरें हम

रँनि लह शोणितमे रँहरें कवरें हम

लेग मोडु रँमातक हमर पख जोडु

रँमातक संगे-संग रँहरें कवरें हम

किए रिसवेमे नागज डी हमवा अलमे



डॉह रँमि अहाँ मंग बहरो कवरँ हम

ले रूमनहँ अही त दोख अनकब कथी

अ तिवयावक तीव महरँ कवरँ हम

ठै किछ दिन जेन जिनगी तकव मोहे की

लेतीक भरष रँमि ठहरँ कवरँ हम

मिठ नागत की कक तकव पवराह ले

जे मट ठै उँटित ठै कहरँ कवरँ हम

अहाँ घोँठी गवन रूमि की पीरी सुधा कहि

'नरन' लह-डाली त महरँ कवरँ हम

*आख-१७



गजव- ३

हूणका संग लिख रँटु आगाँ जे छथि अतिथानक पक्षमे

छनु करै छी नर पठन पुनि नर-क्रांतिक उगनक्षमे

नमन करैत छी हूणका जे संग छथि रँनि सहभागी

हूणको ज्ञम के दुब कवर जे सभ छथि ठाठ रिपक्षमे

छनु कवी अग्रगणन हूणकव जे छथि क्लमक अग्रश्री

पडरानन छथि जे अन्धाले तनिको आनर समकक्षमे

कर्मठ छै जे कर्मभूमिमे हावत-जीतत रूत सफल

ओ की जाले मोन एकव जे रँस गग डाँठै सुतन कक्षमे

"नरन" बाट ले आरै जकवा तकवा ले सभ अगले ठेठ

घुबराक नुनि ले जकवा से त्रुष्ट तकरो कवते अक्षमे

*आथव-२२

गजव- १

जिणगी भवि रँस रार्थक टिता

मरितहू नागन स्रक्षक टिता



अलक खगल छै निर्धन टितित

कवए धनिकहो अर्थक टिता

पहिलक भेटैते दमके ननसा

दम प्रबिते शुक शतकक टिता

बहुअक छुथि रिआहन सभ मावन

काँचमावके घटकक टिता

आशा हबक लागल छै सभके

ककरो "नरन" ले कर्मक टिता

*मात्रा क्रम: २२२+१२२+२२२

ए बचनपर अपन मतब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



१. काश्लि कायागनी- आशुक पूर्ण कवणे २. रिनीता सा- टैन ३.



ज्याति सा टोधवी- लिया ऊब्दी सँ आउ ल (रेजेन्टाँस डे पब विशेष)

लिया ऊब्दी स२ आउ ल

१



कामिनी कामायनी

आशुिक पूर्ण कवने

पौखरिक माष्टि सँ पितडिया फुलडालि माँजैत/
रात्री ०७ दिन रौड उदस भन् गेल डुगीह/
जखन घासक छिष्टी ,माथ सँ उँतारि/
घुँसक आगलरानी /आँटव मे राँहन /
गंगा मैयाक पवसाद देनकहि /
हविद्राव सँ आएन डन/ कसु नला क२ /
माथ पव रौमन डन ,कतेक बास थिम्साक /
सह सह करैत लोक / झँडे मुँड चाक दिस /
तिन बखराक जप्पह नहि /
उँपवका स्राम उँगले /
निटूनका नीटे /
झुदा सहस्र राँहू सभ रौँठी /
माय राँहू दुस्रु केँ पजिया क२ भीडकेँ धकियारौँत /
आरि गेला घाँठ पव /
० निर्मल, ० कन कन जन /
डुरँकी पव डुरँकी /



उतबि गेन सत पाप /
रएह तँ सुझ / आँथिसँ देखन /
ओ हँपी आ शीख सँ गुँजेत ,/
गुदक दवरौव सन सजन / मैयाक आवती ।
ओग दिन तँ शुकखाते छलै पोथीक /
बाँटैत बहनी कतेको दिन / मास /
सुध रूँव रिसवन /
बाँरी संग कतेको मगया सत नगत बहनी उमास /
देती की माते , हुँको ग़ा पुंया नात /
बाँ अहिना कोन मे पडन पडन /
जिणगी होगत बहत थाक ।
मान जान / पशु / पाथी /
मृतककेँ उँछाव कवए रानी /
पतितपारिणी / सुलोथ ठमवो सरहक रिनाप ।
आ दनाम पव/
आँगन मे/
ओसावा पव/
गोहानी मे /
पोथबिक महाड पव/
बँलैत बहलै रिसरौसक पुन/
फुजवणी अपन तबकारी रेंच क२/
मनाहीन माड / तेजिन तेन /
फुन्डगन अपन माँक रौसन रेंचि /



प्रवहितागल लोष्ठी /हसुली /
रँहकी बाधि करैत बहनी रँष्टक ओरियाल
बहि ज्जाति / बहि हन गौबरक प्रमाण /
कतेक दिन सँ एतरो नागल रियाल /
जे रंगा असननीया जेरै /
आ ओहो माय आरि गेलै /नालि गेलै रंगम मे हस्त /
रिन लोला प्रकथ पातकेँ लहोवा पाती केल /
मोष्ठीची मोष्ठीची रँहल / अथवति /
शीसन पव/ गहुँट गेल बहे/बहा धो क२/ बरँ बरँ रस्त मे /
सम्पूर्ण गायक आधा सँ रँसीए स्त्रीगण सत /
युन /कातेज मे / पठय /पठरँ रानी रँष्टी /प्रतौह /
अस्पतान मे काज करैत मिश्टुव /
डिग्री धारी नरतुबिया रंग /
गायक ह्दथिया सहजोँ पीसी सेहो /
रुँमेत अगना केँ महान /
रँहवागल डन / सरँहक रंग /
कवरँक लेन अगल कन्या /
माध हेते पूर्ण आर /
कवरँक रंगा अलान ।

२



रिनीता सा- टैम



टेल

जखन गेलौं टेल नग रैसन,
ओ झूठ रिचका कइ पड़ । गेल ।
पहिले घुसल डन अंगना मे,
ल कहि कतइ आरि रिना गेल ।
जखन गेलौं ओकवा दुनियाँ मे तोकस,
रिच मे रैष्ट हमर अपल हेवा गेल ।
कहियो भवमा कइ सपना देखोल डन,
आंग काज पडन तँ अंगन मे रैसन छोटि गेल ।
ओ जे गेल तँ चरिये गेल,
दिन-बाति रैष्ट सभ ताकेत बहि गेल ।

३



ज्याति सा टोषरी

पिया जल्दी सँ आउ ल (रैलेन्टागल डे पव रिशेय)

पिया कथीक अछि एहेन गुमान
अलं किछु तँ रैताउ ल
छोड़ू - छोड़ू ल डोली कहब
अलं ओहिना नइ जाउ ल २२

आं थि हमर अछि द्वाले पव गावत
पुवी पकराण रैनि बाखन सेबायत
केल रैसन डी सोनह रिगाव
अलं जल्दी सइ आउ ल २२
छोड़ू - छोड़ू ल डोली कहब
अलं ओहिना नइ जाउ ल २२

साँसक आघात सँ गजोत पड़ लत
दिन भविक असगकथा मोल अघायत
तुनसी टोड़ । पव दीपक कतव



अर्लं घब जगमगाडं ले २२
छोड़ू-छोड़ू ले डोली कहाव

अर्लं ओहिना न२ जाडं ले २२

संगे न२ जायरे अगिना रेव कहनहुँ
रिश्वास बाथिक हम नहि किड रँजनहुँ
रीतन जागए उमरक रँहाव
अर्लं काज रिमबाडं ले२२
छोड़ू-छोड़ू ले डोली कहाव
अर्लं ओहिना न२ जाडं ले २२

ई बचनोपर अणन मंतर ggajendra@videha.com पर पोछाडं ।



१. बाजुदेर माडवक दु लोष्ट करिता २.



जगदीश शंसाद माडवक दुष्टी गीत

१



बाजुदेर माडवक

दुष्टी करिता-

बाजुदेर माडवक जिक दुष्टी करिता



दग्ध सुव

कनीकेँ सुव सुनि

लिक भेन पागन

अनुवमे किछु जागन

जेनक कास हनि

मममे गपुकेँ थुनि

कनी रँजेत अछि अगलहि धुनि-

“मधुमासक आगमन भेन

अहाँ हँसि गेलौ कोन खेन

द्वन्द्व केषा रिसवि खेन

के रँलौनक एहेन जेन

जतए छलैत अछि फलेरी खेन

हमवा रँषा देलौ रँकजेन

आकि अहाँ रँषि गेलौ सगत

रियोगक दाहसँ दग्धु डी कगत

साँटे अनुगत अछि रसगत

किन्तु हमर लै देखै अनुगत ।”

अज्ञोतक रसुत्र

घब-दुआरिकेँ बीग



हाथमे लेल जलैत दीप
अन्हाकसँ नदरौक गच्छा
क२ बहन समैक प्रतीक्षा
हराक माँ का क२ बहन खेन
दीया अगनाकेँ रँचेरौक लेन
आँचव तव ठूकि गेन
जेना गजोत रसूँ रँनि गेन
आँथिकेँ अन्ध्र दीप स्वप्नाएन
जे डन द्रुमाएन
बाँछ अछि अमीस, अगाव
अछन चाकतव अन्हाव
एक दीप अछि ज्वरनित
तँ कवत अलकोकेँ प्रज्वरनित
लसि बहन खेल गहए आस
ठासहि-ठास खेनत उँजास ।



खगदीने प्रसाद माउव खीक दुषी गीत-

मवम देखि.....

मवम देखि मरहित लोग छै

मरि देखि मरहित लोग छै ।

डाह मवम मरष देखि

मरहित धूक-धूक तके छै ।

तावण-मावण देखि-देखि

तिनमिना तिन-तिन खसै छै ।

तिनमिना तिन-तिन खसै छै ।

मवम देखि..... ।

मरकि आहत देखि-देखि

घात-खरघात छन्दए नलै छै ।



तगव तीव तीर्डा - तीर्डा

सगव देह सकरौधन देखे छै ।

सगहव देह सकरौधन देखे छै ।

मवम देखि..... ।

मर्मा मारि म्मवारि जोडा

रुमारि मारि मारैत बहे छै ।

खर्डा - मोडा ईष्ट कम्मी

बाँष्ट-बाँष्ट सकरौधन देखे छै ।

बाँष्ट-बाँष्ट सकरौधन देखे छै ।

मवम देखि..... ।

मर्मा एक दुनियाँ रैनि

जिनगीक पाठ पठैत बहे छै ।

दोसव मवम मरु रैनि

भूत-बाकमे छहलैत बहे छै ।

भूत-बाकमे छहलैत बहे छै ।

मवम देखि..... ।



दानि-सुग.....

दानि-सुग दानि एलौ

भाय यौ, सुग-दानि दानि एलौ।

कखला घाँ कखला अगम

रौट पाणि दनिआगत एलौ।

पकड़ा पाँधि सुगला गीदक

दान दान दनिआगत एलौ

भाय यौ, दानि.....।

कखला सिष्टी रौठ रैनि

संगे-संग पथवागत एलौ।

दोखवा-तेखवा कखला रैनि

झवनी संग तजागत एलौ

भाय यौ, झवनी संग तजागत एलौ।

दानि-सुग.....।

जन्ना सिव गाछ पकड़ा

रौस जान जनिआगत एलौ।

अकूआ-सुथनी हन पकड़ा



मरिया-अरिया ह्यकागत एलौ

भाय यौ, मरिया-अरिया ह्यकागत एलौ ।

दानमि-सुप..... ।

कवणी-धवणी रँडणी रँमि

अंगल घव रँहवागत एलौ ।

गुड 1-खुदी खखरी रँमि

गुडचन्ना-चना चनमि एलौ

भाय यौ, गुडचन्ना चना चनमि एलौ ।

दानमि-सुप..... ।

ई बरसाव अगम मतिर ggajendra@videha.com पव पठाड ।



रौन अरुण पाठक- गजन १-२

गजन

मिनलौ अगम दामसँ भेन पुनकित मोष
रौतन पलव निवहक भेन हर्षित मोष

हुन अँधि मागव तहिंसँ सुनामी उठन
रँहलौ तकव रेगसँ भेन रिचनित मोष

रौजन तँ जेना बुनु हुन मलवन अरुसँ
ठौबक मधुव पाससँ भेन शोभित मोष

ओकव रँठन डेगसँ दर्द हविया उठन



पायनक सुनिते सुव भेन ज़ीरित मोण

थीतक तवाजू पव तौनरौ धन अण
रिवहक दिया ज़डिते भेन पीडित मोण

रहले सगीस ,मात्राफ़्या २२१२ २२२१ २२२१

२. गजन

पिया रीन एहि यव बहिये क२ की कवरौ
रिवह सन आगिये ज़डिये क२ की कवरौ

अण कनिसौ ज़खन कहि ले सकरौ हमा
पिया कवमे अण धरिये क२ की कवरौ

निराना ज़खन ले भेठत तँ रुमरौ दुख
गवीरक दुख अहाँ सुनिये क२ की कवरौ

उड़ रौ देधि थिनी लोक हमा यौ
समाजक रनि हँसी बहिये क२ की कवरौ

ज़खन दर्दक गनाजै ले अहाँ नग यौ
तखन रैखा हमर सुनिये क२ की कवरौ

रहले हज्ज मात्रा फ़्या १२२२ तीस रौव

ए बचनपव अण मंतर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



१. **रिन्दुयैव ठाकुर लपावी** - प्रेम / गजन २.



सुमित चित्री - गजन १-२

१



रिन्दुयैव ठाकुर लपावी
धनुषा लपाव , सवःकताव



प्रेम / गजन

१

प्रेम

ले मोटु ले घरवाड अहाँ
एक दिन हम जकब अएरै
संगमे दस, तिहार तथा
स्वालेष्टांगल सेहो मनाएरै । ।

दुःख कतरौ दुःखवणव होगतो
नाथ कोसक रीट होग छै
प्रीतम दुब पहाडणव होगतो
घब-आङ्गक रीट होग छै । ।

आजुक दिन प्रेमक प्रतीक
प्याव करी से मम करैए
अहाँ संगक संगड़ 1-प्याव
दुःख हमरा याद अरैए । ।

२

गजन

देखरै मसाली कतेक दिन करै छी
रिधरा संग कहानी कतेक दिन करै छी

समय चक्रमे अरुँ द्रुवडाएरै
जीरणक प्रनामी कतेक दिन करै छी

मानर भ२ मानरता सीधु
दोसबक प्रनामी कतेक दिन करै छी

मनिष ले कर छिनिनाक संकृति
रौंखा -रूँटिक दुःख कतेक दिन करै छी

समयमे एखला निक पथ लोजु
मानरताक प्रनामी कतेक दिन करै छी

२



स्मृति मिश्र
कविता, समाजसेवा

गजल-1

पहाड संग ठकलेरौक जेन अछैन रिश्राम चाली
ले मिना सके एहन ज्ञानाङ्ग खीके प्रकाशि चाली

पिंजवाक रंधन मे रंध पंडी कोणा क२ उं डि सकत
कोला सगणा पुवा कवरौक जेन अछु आकशि चाली

कलेज पव छेष्ट कलेत भरिया केव किछु सराज
शीग रा मोती पार२ जेन सागव पिरोक पियाम चाली

अन्हारेमे आयन दिनकव सँ सँभाव बोशिन छै
अन्वेषता सँ जीतरीक जेन निर्वतव प्रयास चाली

अ चनायमाण दुनिया अन्तरवत चलेत बहत
अदा अचन नाम जेन पठटाष किछु खाम चाली

माष्टि पव निवन फुन सँ भी घब-आँगन गमकत
अदा ओसवायन रौंठेसँ सली बाहके तनाशि चाली

प्रुपा कवरँ माँ शोबदे आरँ नारँ फँसल सँमधाव
हलेक खेन जीत सकी स्मृति के एतरेँ अशि चाली

रर्ष-20

गजल-2

सरेँठा मोषक रात हुनक आँधि रँता गेन
रँहन एहन रँसात हमर होशि उँड १ गेन

बदीकेँ धावकेँ रिपवीत चनरीक कोशिनि
भसित जा बहन स्रग्न सरेँ किछु हेवा गेन

पाथवपव फुन उँगायरेँ जुनि छै कठिन
डेगहिँ-डेग मिनन निवाशि अशि जगु गेन

स्वार्थक रँदवी मणरतापव सँडवायन
भाँग-भाँगमे दुग्धनी गामक-गाम जवा गेन



संस्कृतिकेँ सकसोरैत बर जमानकेँ दोड
लोक-नाज गम अगम उपस्थिति देखा गेल

गवरीरी केव नती छहुँ ओव नतवन अछि
गमकेँत हुनरोडी "स्मृति" पत्र भविष्ये सुखा गेल

रूप-17

ई बलापब अगम मंतर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



१. ज्योति सा टोषरी २. राजनाथ मिश्र (द्विगम मिथिला) ३. उमेश
मंडन (मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक जीर-जसु/ मिथिलाक जिनगी)

१.



ज्योति सा टोषरी



५.



बाजनाथ मिश्र

द्वितीय मिथिला स्नागड शो

द्वितीय मिथिला (<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)



३.



उमेश मंडल

मिथिलाक रणस्पति झागड शो

मिथिलाक ज़ीर-जुहु झागड शो

मिथिलाक ज़िणगी झागड शो

मिथिलाक रणस्पति/ मिथिलाक ज़ीर जुहु/ मिथिलाक ज़िणगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई बचोपब अपन मंतर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बौनाभा प्रते



१. गकज टोडवी "नरनशी" - बौन गजत १-३ २.



अमित मिसे - बौन करिता १-३

१



गकज टोडवी "नरनशी"

बौन गजत-१



संगी सभके संगे लै छी

छन लैया फिकनिक मनरै छी

माँ देते टिकस आ चाँव

बाँकी बाँरु के कहि दे छी

टूला जावनि रौसन आले

आ सभकिछ मिनिजुनि पकरै छी

तीमल करगव फिठगव तसाग

पुवी आ हनुआ रँगरै छी

केवा पातक थावी सुल्लव

तुँ सभ रैसै हम पवसै छी

‘नरनसँ’ कहि दे एते ओहो

सगड़ १-सामरै सभ हिसरै छी

‘सात्रा एका-आठ ठा दीर्घ सभ पाँतिमे

० पंकज टोषवी ‘नरनशी’



बीब गखव-२

देख भेलै भोव भैया

आरि आनस जोड़ भैया

दाय-रौरा माय-रौरु

नाग सभके गोव भैया

गाड़ बीमक डूँच रँड डै

छटि क दतमनि तोड़ भैया

धो क झूँह छे ल नहा नी

बुख मावस जोव भैया

दाहि रेशी भात ले कम

खुर थो तिमकोव भैया

था क पुनि पोथी न रेशी

छन पठो छी थोड़ भैया



छन छलै छी खेन खेनरै

रैनि सिगाली-छेव डैया

अ सिमलक ताग कहियो

होय लै कमजोब डैया

तौ "नरन" डैया हमर छै

हम रहिनिया तौव डैया

*रैहले बगन/मात्रा एम-२५२२+२५२२

० गंकज टोपरी "नरनश्री"

रौब गजब-३

टाव गव फचरौत कौशा

सभ सलशा दैत कौशा

छैठ गव रैसन त कथला

मेघमे डमकैत कौशा



ताकि गोपी ज्ञान माले

गाढ पब हृदकेत कोश

काग दम ठी मूस एगो

ताहि ले मगडेत कोश

डीन हाथक मत्त जिनैरी

उडन पुनि रसैत कोश

एँठ रामन देखि दोगन

अल ले तबसैत कोश

भोज अँगन भाग जाली

पात पब बुधकेत कोश

सुगमे खुदी पसावन

दास छुनि उडरैत कोश

देखि सुतन दास के पुनि

सुग दिस समरैत कोश

"बरन" कागक अजरै नीन

जोक के नटरैत कोश



*रैहले बगन/गात्रा फम-२९२२+२९२२

ॐ पंकज टोषरी "नरनश्री"

२



अघित शिष्टे
कवियन ,समसुतीशुव ,शिविवा ,विलव

अघित शिष्टे

रौन करिता

1

पठंग रैनारै ले

पल्लौ कागत फाड़ ले
सुल्लव पठंग रैनारै ले
मैदान रैछी भले ले
नाल आगिपव रैवकारै ले
नम-नम जेग रैनारै ले
साकक काठी खाले ले
सोधा आ गोल बाये ले
कागतक टिप्पी सांठे ले
मय्या कागत कांठे ले
कोणपव गुंडवी रैनारै ले
रैहते वागा खाले ले
दु दिशि भुव कले ले
चन गृह्णीके नाये ले
कनिये कान सुखारै ले
दैरा परण रैनारै ले
चन पठंग उंड रै ले
रौधे रौधे दौड़ ले
अय्यवमे पठंग नाटे ले
गीटा हमाङ्ग सर गारै ले
सर मिन पठंग रैनारै ले



२

राँराकेँ

मोथका नागी राँराकेँ
 रँडका रँष्टी राँराकेँ
 घब आँगण गुँजि बहन
 प्रेम भवन हँसी राँराकेँ

भवन चुलोठी राँराकेँ
 काण कलेठी राँराकेँ
 नर नर सरकसँ छै भवन
 सरँष्टी देन शोथी राँराकेँ

कर्ता -घोती राँराकेँ
 कर्तीक मोती राँराकेँ
 एथला सरँष्टी ग्याद अछि
 थिम्सा-पिहानी राँराकेँ

डाँव मुकल राँराकेँ
 दाँत धुँष्टन राँराकेँ
 कहिया एथिष भगराष घबसँ
 कते मान भेन देखन राँराकेँ

३

उंसन अडाक त्राय

एकठा बाजा धुँष्टन पुवमे
 बाज करै छन रँड नीकसँ
 एक दिन घँठे अजगत घँठना
 सोणमारकेँ पकडल एले कोणमा
 कोणमा कहनक सोणमारकेँ देखु सबकाव
 टोवा क२ खेनक उंसन अडा वाति अन्हाव
 अन्डारसँ मुर्गी रहबैते
 ओहिसँ रहते दूगी होगते
 रँट रँट खुर पाग कमेटे
 रँडका गाडी रँगना किरिते
 एकवा दिओ सजा कड १ग
 हमवा दिखारु सरँष्टी पाग

बाजा रहते सोचमे पडन
 धियाणसँ सरँष्टी गप बुमन
 बुमि गेन कोणमारकेँ टालि
 बुधिक कान चनेनक हाजि-हाजि
 बाजा कहनक सुन बै कोणमा
 दोडन टलि जे अपन अगना



रैबुबक गाडुगव आम छै हवव
तोडल आरौ सरैठा पाकव

कोणमारै मांथा चकलेले
रैबुबमे आम कतसँ एले
बाजारै मिज शिका कहनक
बाज तखन गप बुनेनक
जहिना रैबुबमे ले आम फड्डे छै
तहिना उमन अल्डसँ ले दुर्गी जन्ममे छै
कोणमा मागनक अपन गनती
सोणमासँ भ२ गेले दोस्त
आय देखि रैड तानी राजन
गाँगवि दारि क२ कोणमा भागन

ए बसोपव अपन मतलब ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

रैठा लेकनि द्वारा स्वकीय श्लोक

१. प्रीति: कान अँलदुर्धुर्त (सुर्योदयक एक शंठी पहिल) सरप्रथम अपन दुनु हाथ देखरौक चली, आ ग
श्लोक रैजरौक चली ।

कवाथे रसते नक्षी: कवमरा सबसती ।

कवमले हितो अँला प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षी रँसते छथि, कवक मरामे सबसती, कवक मुनमे अँला हित छथि । भोवमे तहि दूरे
कवक दर्शन करौक थीक ।

२. संध्या कान दीप लेसरौक कान-

दीपमूले हितो अँला दीपमरा जगदर्शन: ।

दीपाथे शिर्कव: प्राकत: संध्याज्यातिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे अँला, दीपक मरामे जगदर्शन (रिष्टु) आ२ दीपक अग्र भागमे शिर्कव हित छथि ।
हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ मरामे ।

३. सुतरौक कान-

बाग कर्द लमुसुं रैणतेयं बृकोदवम् ।

शयले य: सारैरैव दु:स्वप्नस्तुश शयति ॥



जे सत दिन स्वतंत्राँ पहिल बाग, रुमावन्नामी, हनुमान्, गकड आऽ तीमक साका करैत छथि, हुनकव दूःस्वप्न नष्ट भऽ जगत छहि ।

४. नहरौक समय-

गर्भ च यद्गले टेर गौदारवि सब्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽसिन् सन्निधिं करु ॥

हे गर्गा, यद्गला, गौदारवी, सब्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी धार । एहि जनमे अंगन साक्षिधा दिख ।

३. उँतुवँ यसेद्गदशु हिमाद्रेश्चर दक्षिणम् ।

रथं तत् भावतं नाम भावती यत्र सप्रतिः ॥

सद्गदक उँतुवमे आऽ हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आऽ उँतुका सप्रति भावती कहलैत छथि ।

३. अहम्या द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चकं वा सरेह्विं महापातकशिकम् ॥

जे सत दिन अहम्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मन्दादरी, एहि पाँच साक्षी-स्त्रीक साका करैत छथि, हुनकव सत पाप नष्ट भऽ जगत छहि ।

१. अश्विथोमा रैजिर्यासो हनुमान्च रितीयाः ।

स्रपः पवश्रामश्च सप्रुते चिबङ्गीरिणः ॥

अश्विथोमा, रैजि, र्यास, हनुमान्, रितीया, स्रपाचर्य आऽ पवश्राम- ङा सात ठी चिबङ्गीरी कहलैत छथि ।

+साते भरतु स्रुतीता देरी शिखर रामिणी

उँश्रेण तपसा न्द्रा यया पशुपतिः पतिः ।

मिच्छिः सारु सतामन्त्रु प्रसादान्त्रु धूर्जठैः

जाह्नरीहेश्वरेश्वर यन्त्रुषि शिषिणः कना ॥

९. रौजोऽहं जगदामन्द न ये रौजा सब्रती ।

अपूर्णे पंचमे रथे र्क्यामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाहित मन्त्रेश्वर यजुर्देद अथाय २२, मंत्र २२)

आँ अँह्विण्य अँजापतिवृद्धिः । र्तिभोक्तृता देरताः । स्वबाङ्कुकैतिवृद्धिः । यङ्जः स्वः ॥



आ अक्षरं ज्ञानस्यो अक्षरंसी ज्ञानतया वाञ्छे वाञ्छ्यः शुभेऽग्यराऽतिर्याधी महावधो ज्ञानता दोग्ध्री
प्रेषुरोठलड्रानाशुः सतिः पुवक्रियोरि जिष्णु वपेयाः सभेयो हराण्य यजमान्य रीवो ज्ञानता निकामे-
निकामे नः पुञ्ज्या रयितु फनरवा न्उषधयः पछन्ता योकोक्यो नः कपताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मन्त्रावथाः । शिव्यां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयान्तु ।

ॐ दीर्घाघर्तुर । ॐ सौभाग्यरती भुर ।

हे भगवान् । अपन देमिमे सुयोग्य आ सररुत रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शुकुके शशि कश्चित्तव सन्निक
उपेन्न होथि । अपन देमिक गाय खुरै दुध दय रानी, रवद भाव रहल कवएमे सक्षम होथि आ योड्ड ।
ह्रवित कपे दोगय रना होए । स्त्रीगण षगवक लहन्न कवरामे सक्षम होथि आ हरक सभामे ओजपूर्ण
भाषण देरैयरना आ लहन्न देरामे सक्षम होथि । अपन देमिमे जखन आरुष्टक होय रया होए आ
उषधिक-रुष्टी सररुत परिपक्व होगत बहए । एरै एमे सभ तवहै हमरा सन्निक कनाश होए । शिवुक
बुद्धिक शशि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थके कोन रनुक गजा कवरोक चाही तकर रनि एहि मन्त्रमे कएल गेल अछि ।

एहिमे राचकगुणामानड्ड काव अछि ।

अश्वय-

अक्षरं - रिद्या आदि ग्रामं परिपूर्णं अक्षरं

वाञ्छे - देमिमे

अक्षरंसी-अक्षरं रिद्याक तेजसं हकत

आ ज्ञानता- उपेन्न होए

वाञ्छ्यः - वाजा

शुभे- रिषा डव रना

अग्यरा- रीश चेरामे सिष्णु

अतिर्याधी-शुकुके ताका दय रना

महावधो-पैघ वथ रना रीव

दोग्ध्री-कामना(दुध पूर्ण कवए रानी)

प्रेषुरोठलड्रानाशुः प्रेष-शौ रा रशी रोठलड्र- पैघ रवद नाशुः -आशुः-ह्रवित

सतिः-योड्ड ।



पुवञ्चि-योरा- पुवञ्चि- रायलावकेँ धाका कवए रानी योरा-स्त्री

जिष्णु-शत्रुकेँ जीतए राना

वप्रेष्ठाः-वथ पव हिव

सन्भेयो-उत्तम सभामे

हराश-हरा जेहन

यज्जमानश-बाजाक बाजामे

रीयो-शत्रुकेँ पवाजित कवएराना

निकामे-निकामे-निश्चयशकत कार्यामे

नः-हमर सभक

पर्जन्या-मेघ

रयतु-रया होए

हनरवा-उत्तम हन राना

उषसः-उषसिः

पटशुर्वा- पाकए

योगेष्कमो-अनश नश कवेरौक हेतु कएन गेन योगक बक्सा

नः'-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिषिथक अश्वराद- हे अँरुषा, हमर बाजामे अँरुषा नीक धार्मिक रिद्या राना, बाजन्त-रीव,तीवँदाज, दुष दए रानी गाय, दौगय राना जन्तु, उँगुमी नारी होथि । पर्जन्य आरशुकता पडना पव रया देथि, हन देन राना गाड पाकए, हम सभ सँगति अँरुषित/सवकित करी ।

8.VI DEHA FOR NON RESI DENT S

8.1 to 8.3 MAITHI LI LITERATURE I N ENGLI SH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary



8.1.2.The Science of Words – GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

Send your comments to ggajendra@videha.com

बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचनालेखन-

गह्निशिलोच-मैथिली- / मैथिलीलोच-गह्निमे- प्राजेकर्के आगु रैठ डि, अणन सुमार आ योगदान ग-
मेन द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाडुं ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-रैतानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मलक मीठी आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठक्य**

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैतानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मलक मीठी

१.१. लपावक मैथिली भाषा रैतानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मलक उँचाका आ लेखन मीठी

(भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादरक धाकाले पूर्ण कर्गसँ सभ नः निर्धारित)

मैथिलीमे उँचाका तथा लेखन

१. पठमाक्षर आ अक्षराक: पठमाक्षरवास्तुगत ७, ए३, ण, न एरी म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराक
निर्देशक अक्षरमे जाहि रक्षक अक्षर बहेत अछि ओही रक्षक पठमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अर्क (क रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)

पठ (च रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)

खल (ठ रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ण आएन अछि ।)

सखि (त रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे न आएन अछि ।)

खस्र (प रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे म आएन अछि ।)

उँपर्याङ रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पठमाक्षरक रैदनामे अरिक्कानि जगहपब अक्षराक
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पठ, खड, सधि, खड आदि । ब्राकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक
कहर डनि जे करख, चरख आ ठरखसँ पूर्ण अक्षराक निखन जाए तथा तरख आ परखसँ पूर्ण पठमाक्षर



निखन जाए। जेना- अक, टने, अडा, अलु तथा कषण। दूदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतिके नहि मालेत छथि। ओ लोकनि अलु आ कषणक जगहपर सेहो अत आ कषण निखेत देखन जागत छथि।

बरीष गहति किछु सुविधाजनक अरुष्ट टिके। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रीतत होगत टिके। दूदा कतोक रेव हस्तलेखन वा दूदामे अक्षरावक जोष्ट मन रिन्दू स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि। अक्षरावक प्रयोगमे उँटावा-दोषक सम्वारणा सेहो ततरै देखन जागत अछि। एतदर्थ कसँ न२ क२ परखा धरि पञ्चमालेक प्रयोग करै उँटित अछि। यसँ न२ क२ त्रु धरिक अक्षरक सम्व अक्षरावक प्रयोग करबामे कतहु कोणा बिराद नहि देखन जागु।

२.ठ आ ठ : ठक उँटावा "व ह"जकाँ होगत अछि। अतः जतः "व ह"क उँटावा हो ओतः मात्र ठ निखन जाए। आन ठाम खाली ठ निखन जाएरौक चाली। जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठम्, ठेरी, ठाकनि, ठाँ आदि।

ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, बूँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठ, पीठ आदि।

उँपर्याङ्ग शिष्ट, सभकेँ देखनासँ ज स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे ठ आ मया तथा अक्षरमे ठ अरौत अछि। गह निगम ड आ डक सम्वर्त सेहो नागु होगत अछि।

३.र आ रँ : मैथिलीमे "र"क उँटावा रँ कएन जागत अछि, दूदा ओकवा रँ कएमे नहि निखन जाएरौक चाली। जेना- उँटावा : रँणनाथ, रँिया, रँर, देरँता, रँिष्ट, रँि, रँदना आदि। एहि सभक स्थानपर फ्रमिः रँणनाथ, रँिया, रँर, देरता, रँिष्ट, रँि, रँदना निखरौक चाली। सामान्यतया र उँटावाक जेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि। जेना- ओकीन, ओहन आदि।

४.य आ ज : कतहु-कतहु "य"क उँटावा "ज"जकाँ करैत देखन जागत अछि, दूदा ओकवा ज नहि निखरौक चाली। उँटावामे यरु, जदि, जदना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरौना शिष्ट, सभकेँ फ्रमिः यरु, यदि, यदना, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखरौक चाली।

३.ए आ य : मैथिलीक रतिनामे ए आ य दूनु निखन जागत अछि।

प्राचीन रतिना- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

बरीष रतिना- कयन, जाय, होगत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरौत अछि। जेना एहि, एणा, एकव, एहन आदि। एहि शिष्ट, सभक स्थानपर यहि, यणा, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि करबौक चाली। यद्यपि मैथिलीभायी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्थामे "ए"केँ य कहि उँटावा कएन जागत अछि।

ए आ "य"क प्रयोगक सम्वर्तमे प्राचीन गहतिक अक्षरक कएरँ उँपर्याङ्ग माणि एहि पुस्तकमे ओकले प्रयोग कएन गेल अछि। किएक तँ दूनुक लेखनमे कोणा सहजता आ दूकहताक रीत नहि अछि। आ मैथिलीक सरिसाधारणक उँटावा-शीली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकट टिके। थाम क२ कएन, हएरँ आदि



कतिपय शिष्टकेँ केन, हेर आदि कपमे कतहू-कतहू लिखन जखर सैहो “ए” क प्रयोगकेँ रैसी समीपन प्रमाणीत करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोला रौतपर रैन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणभहू, ओकवहू, तकोनहि, टोष्टहि, आणहू आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्त्रानपर एकाव एरि हूक स्त्रानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणला, तकाने, टोष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अदिकशितः यक उँचाव थ होगत अछि । जेना- यडन्र (थडन्र), योडनी (थोडनी), यष्टकोण (थष्टकोण), वृषेण (वृथेण), सन्त्राय (सन्त्राथ) आदि ।

+. ध्रुमि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टसँ ध्रुमि-लोग भ२ जागत अछि:

(क) फ्रियाग्रयी प्रत्य अयमे य रा ए वृथु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँचाव दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोग-सूचक छिन रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतोक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृथु भ२ जागछ, ऋदा लोग-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य गक उँचावण फ्रियापद, सँज्ञा, ओ विशेष तीनुमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मानिनि छनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसब मानिन छनि गेन ।

(घ) रतमान प्रदन्तुक अन्तिम त वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फ्रियापदक अरमाण गक, उँक, एँक तथा हीकमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियोक, छलीक, छोक, छैक, अरिँतेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरिँते, होग ।



(च) फ्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक लोप भइ जागड । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहवहि, कहवहुँ, गेनह, बहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहवनि, कहवौँ, गेनह, बग, बग्रि, ले ।

९. ध्रुमि श्रुणाश्रुका : कोला-कोला श्रुव-ध्रुमि अणवा जगहसँ हष्टि कइ दोसव ठाम टनि जागत अछि । खस कइ द्यय ग आ उँक सङ्गमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भइ गेन शिङ्क मवा रा अश्रुमे जँ द्यय ग रा उँ आरँध तँ ओकव ध्रुमि श्रुणाश्रुवित भइ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- मेनि (मेगल), पाणि (पागल), दाजि (दागल), माष्टि (मागष्टि), काड्ड (काडुड), मास्र (माडस) आदि । ह्रदा तसेम शिङ्क सभमे ग निश्चय नागु बहि होगत अछि । जेना- बमिकेँ बगम आ श्रुवाँकेँ श्रुवाँडस बहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनस्रु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनस्रु ()क आरंभकता बहि होगत अछि । कवण जे शिङ्क अश्रुमे अ उँटावण बहि होगत अछि । ह्रदा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिङ्क सभमे हनस्रु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि शोथीमे सामान्यतया असंपूर्ण शिङ्केँ मैथिली भाषा सङ्गनि निश्चय अक्षराव हनस्रुरिणी बाखन गेन अछि । ह्रदा ब्याकवण सङ्गनि प्रयोजक जेन अवारंभक श्रुणव कतहू-कतहू हनस्रु देन गेन अछि । प्रसुत शोथीमे मैथिली लेखक प्राचीन आ नरीन दुनु शैलीक सवन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि कइ रर्षि-रिग्यास कएन गेन अछि । श्रुण आ समयमे रँचतक स्रंश्रि हनु-लेखन तथा तर्कनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिसारँसँ रर्षि-रिग्यास गिनाओन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली माह्रभायी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक लेन जेरँ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ कथित बहि होगक, ताहू दिस लेखक-संजन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादरक कहँ छनि जे सवनताक अक्षमकालमे एहन अरुआ किमूह ल आरँ देरँक टाली जे भाषाक विशेषता डहँमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग नइ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, षटना द्वारा निर्यत मैथिली लेखन-मेव

१. जे शिङ्क, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उँदहवणार्थ-

ग्राह

एख

ठास

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्राह



अखल, अथनि, एथेल, अथनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकब, तेकब
तिनकब। (रैकल्पिक कर्षे ग्राह्य)
ईड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्ष रैकल्पिकतया अगनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन वा भॣ गेन। जा बहन अडि, जाय बहन अडि, जॣ बहन अडि। कब गेनाह, वा कबय गेनाह वा कबॣ गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत अडि यथा कहननि वा कहनहि।

४. 'ए' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत स्पृष्टत: 'अग' तथा 'अउ' सदृशी उच्चारण गप्प हो। यथा- देथेत, डलेक, रौंथा, डौक गवादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि कर्षे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, गॣह, उॣह, जेह तथा देह।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'ग' के वृत्त कबरे सामान्यत: अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आरैह, मानिनि गेनि (सम्वय मात्रमे)।

७. स्वतंत्र क्रम 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे 'ँ' यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कर्षे 'ए' वा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन वा कॣन, अयनाह वा अॣनाह, जाय वा जॣय गवादि।

८. उच्चारणमे दु स्ववक रीट जे 'य' ध्वनि स्वत: आरि जागत अडि तकरा जेथमे स्थान रैकल्पिक कर्षे देन जाय। यथा- धीथा, अॣथीथा, रिथाह, वा धीया, अॣथीया, रियाह।

९. साव्यनामिक स्वतंत्र स्ववक स्थान यथार्तभर 'ए' लिखन जाय वा साव्यनामिक स्वव। यथा:- मैॣय, कनिॣय, किॣवतनिॣय वा मैॣय, कनिॣय, किॣवतनिॣय।

१०. कावकक रिॣतकिॣतक निम्नलिखित कर्ष ग्राह्य:- हाथके, हाथस, हाथे, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अणुस्वार सरिथा लज्जा थिक। 'क' क रैकल्पिक कर्ष 'केव' बाखन जा सकैत अडि।

११. पुरिकातिक प्रियागदक रौद 'कय' वा 'कॣय' अरय रैकल्पिक कर्षे नगाउन जा सकैत अडि। यथा:- देखि कय वा देखि कॣय।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय।

१३. अॣर 'न' ओ अॣर 'य' क रौदना अणुस्वार नहि लिखन जाय, किंतु ङागाक स्वरिॣयार्थ अॣर 'ँ' , 'ए' , तथा 'ण' क रौदना अणुस्वारो लिखन जा सकैत अडि। यथा:- अॣर, वा अॣक, अॣरन वा अॣरन, कॣर वा कॣर।

१४. हॣरत चिह्न निश्चयत: नगाउन जाय, किंतु रिॣतकिॣतक र्ष अकारांत प्रयोग कॣन जाय। यथा:- श्रीॣमान्, किंतु श्रीॣमानक।

१५. सत एकन कावक चिह्न शब्दमे सॣठी क लिखन जाय, हॣठी क नहि, सॣयुक्त रिॣतकिॣतक हेतु हॣवाक लिखन जाय, यथा हॣव गॣवक।



१३. अक्षरान्तरिके चन्द्ररिन्दू द्वारा राउ कयन जाय। पर्वत ऋदाक स्वरिबार्थ हि सगल जस्टन मात्रापव अक्षरान्तरिक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रैदना कयन जा सकैत छि। यथा- हि केव रैदना हि।

१५. पूर्ण रिवाय पासोस (।) सूचित कयन जाय।

१६. समस्त पद सृष्टी क निखन जाय, रा हागहेशमसँ जोडि क , हठी क बहि।

१७. निख तथा दिख शैलेमे रीकावी (२) बहि नगाउन जाय।

२०. अक देरनागवी कयमे बाखन जाय।

२१. किछ धुनिक लेव नरीन टिह रैनरौउव जाय। जा अ बहि रैनव अछि तबैत एहि दुनु धुनिक रैदना पुरिबत् अया/ आया/ अय/ आय/ आउ/ अउ निखन जाय। आकि ए रा ओ सँ राउ कयन जाय।

ह.।- लोरिन्दू मा ११/१३ लीकासु अरुव ११/१३ सुलेन्द्र मा सुम ११/०४/१३

२. मैथिलीमे भाषा सभान पाठकय

२.१. उँचाका निर्देशः (बोले कयन कय ग्राह):-

दनु न क उँचाकामे दाँतमे जीह सठत- जेना रौजू नाम, ऋदा ण क उँचाकामे जीह मुर्धामे सठत (ले सठैए तँ उँचाका दोय अछि)- जेना रौजू गणेशी। तावरा शैमे जीह तावसँ, श्ये मुर्धसँ आ दनु मयमे दाँतसँ सठत। निगाँ, सत आ शोषा रौजि कइ देखु। मैथिलीमे ष केँ रैदिक संयुत जकाँ अ सेहो उँचवित कयन जागत अछि, जेना बर्या, दोय। य अलको स्याणव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशी संज्ञा) आ

पडसे उँचवित होगत अछि। मैथिलीमे र क उँचाका रू ने क उँचाका स आ य क उँचाका ज सेहो होगत अछि।

ओहिना दनु ग रेशीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि काका देरनागवीमे आ मिथिलाक्षरमे दनु ग अक्षरक पहिल निखलो जागत आ रौजलो जखरौक चाली। काका जे हिन्दीमे एकव दोयपूर्ण उँचाका होगत अछि (निखन तँ पहिल जागत अछि ऋदा रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दोयक काका हम सत ओकव उँचाका दोयपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी।

अछि- अ ग ड अँड (उँचाका)

छथि- छ ग थ छैथ (उँचाका)

पहुँटि- प हूँ ग ट (उँचाका)

आरि अ आ ग ज ए अँ ओ उँ अ अः म अँ सत लेव मात्रा सेहो अछि, ऋदा अँमे ज अँ ओ उँ अ अः म केँ संज्ञाक्षर कयमे गनत कयमे प्रयुक्त आ उँचवित कयन जागत अछि। जेना म केँ वी कयमे उँचवित कवरि। आ देखियौ- अँ लेव देखिओ क प्रयोग अग्रचित। ऋदा देखिअँ लेव देखियौ अग्रचित। कू सँ ह धवि अ समिलित लेवसँ कू सँ ह रैलैत अछि, ऋदा उँचाका काल हननु हाउ शैलेक अस्तक उँचाकाक प्रवृत्ति रैठन अछि, ऋदा हम जखन मलाजमे ज अस्तमे रैजैत छी, तखनो प्रकाका लोककेँ रैजैत स्वररिहि- मलाज२, रात्रुमे ओ अ हाउ जू = ज रैजै छथि।



हैव त्र अङ्गि ज् आ ए३ क सहाङ्ग द्वा गत उँचावण हागत अङ्गि- गा । उँहिना ह् अङ्गि क् आ य क सहाङ्ग द्वा उँचावण हागत अङ्गि ङ् । हैव न् आ व क सहाङ्ग अङ्गि त्रै (जेना श्रेणिक) आ स् आ व क सहाङ्ग अङ्गि स्र (जेना मिस्र) । त्र भेन त+व ।

उँचावणक आँडियो हागत बिदेह आँकगल <http://www.videha.co.in/> गव उँगनङ्ग अङ्गि । हैव कैँ / सँ / गव गुर्र अँकवसँ सँ क२ लिखु द्वा तँ / क२ सँ क२ । एँमे सँ मे गहिन सँ क२ लिखु आ रौदरौना सँ क२ । अँकक रौद सँ लिखु सँ क२ द्वा अँग ठाँग सँ लिखु सँ क२ जेना

डसँ द्वा सत सँ । हैव उँय य सतय लिखु- डसँ सतय लँ । घवरौयमे रौना द्वा घवरौयमे रावौ प्रहाङ्ग कक ।

वरुए-

वँ द्वा सकेँ (उँचावण सकेँ-ए) ।

द्वा कथला कान वरुए आ वँ मे अँर्य भिन्नता सेहो, जेना मे कना जगहमे पाँकिंग कवरौक अँत्रास वँ उँकरा । गँडनागव गता नागन जे तुँतुँन नामा गँ ड्राँगरव कनष्ट गँसक पाँकिंगमे काज कवैत वरुए ।

डलौ, डनए मे सेहो एँ तवरुक भेन । डनए क उँचावण डन-ए सेहो ।

सँयोगल- (उँचावण सँजोगल)

कैँ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गहमे लँ कक , गहमे क२ सकेँ डी ।)

क (जेना वामक)

वामक आँ सँग (उँचावण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्रबिन्दु आँ अँगुवाव- अँगुवावमे कँठ धरि क प्रयोग हागत अँङ्गि द्वा चन्द्रबिन्दुमे लँ । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचावण हागत अँङ्गि- जेना वामसँ- (उँचावण वाम स२) वामकेँ- (उँचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कैँ जेना वामकेँ भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गहमे) एँ टाक गेँ, सररुक प्रयोग अँरुडित ।



के दोसर अर्थे प्रयाङ्ग भ२ सकेए- जेना, के कहनक ? रिभङ्गि "क" क रँदना एकव प्रयोग
अरुञ्जित ।

नमि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ, नगँ ए सभक उँटावण आ लेखन - ले

उन्न क रँदनामे न्न जेना महन्नपूर्ण (महउन्नपूर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र तीन अक्षरक
संशुद्धाक्षरक प्रयोग उँटित । सम्पति- उँटावण स अ ग त (सम्पति ले- काका सही उँटावण आसागीस
सम्भर ले) । ऋदा सर्वात्तम (सर्वात्तम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोढिये/ पोढि जेन/ पोछए खेव

पोढिये/ पोछए (अर्थ परिवर्तन) पोछए/ पोढि

उ लोकनि (हठा क२, उ मे रिंकावी ले)

उग/ उहि

उहिये/

उहि खेव/ उही व२

जएरौं बैसरो

गँचअयाँ

देखियोक/ (देखिओक ले- तहिना अ मे द्रव्य आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अरुञ्जित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तौँ

हेत / हत

नमि/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सौँसे/ सौँसे

रँच /

रँच (सोबरुव)

गाए (गाँग नहि), ऋदा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले ।)

बहरोँ पहिबतेँ

हमि/ अही



सरै - सभ

सरैरुक - सभरुक

धवि - तक

गग- राँत

रूमरै - समयरै

रूमरौ/ समयरौ/ रूमरहूँ - समयरहूँ

हमरा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकेह/ कबेह (गद्यमे प्रयोगक आरथकता ले)

होगल/ होनि

जागल (जानि ले, जेना देन जागल) दूदा जागि-रूमि (अर्थ परिवर्तन)

गथ/ जाथ

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, के, सँ, गव (शिद्धसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शिद्धसँ सँ क२) दूदा दूरी रा रैसी रिभक्ति संग
बहनागव पहिने रिभक्ति ठाकेँ सँडुँ । जेना एमे सँ ।

एकरी , दूरी (दूदा क२ री)

रिक्तावीक प्रयोग शिद्धक अन्तमे, रीचमे अनारथक कर्पे ले । आकावापु आ अन्तमे अ क राँद रिक्तावीक
प्रयोग ले (जेना दिथ

, आ/ दिथ , आ , आ ले)

अपेक्षार्थीक प्रयोग रिक्तावीक रैदनामे कवरि अन्वृत्त आ मात्र शर्षक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-
उना रिक्तावीक संयुत क२ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दूनु ठाय एकव जाग बहेत
अछि/ बहि सकेत अछि (उँचावमे जाग बहिते अछि) । दूदा अपेक्षार्थीक सेहो अंग्रेजीमे गमेसिर
केसमे जागत अछि आ श्रेष्ठमे शिद्धमे जतए एकव प्रयोग जागत अछि जेना *raison d'être*
एतए सेहो एकव उँचाव वैजेष डेठव जागत अछि, माल अपेक्षार्थीक अरकामे ले दैत अछि रवण
जोडते अछि, से एकव प्रयोग रिक्तावीक रैदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अन्वृत्त) ।

अगसे, एहिसे/ एमे

जगसे, जाहिसे

एथन/ अथन/ अगथन

केँ (के नहि) मे (अन्वृत्त बहित)



भ२

मे

द२

ठ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाछ तब

गाछ वग

साँस खल

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/थथ जेना- ए कावा/ एसँ/ थगले/ रुदा एकव एकटी थाम प्रयोग- नानति कतेक दिनसँ कहैत बहैत थग

ले/वथ जेना लेसँ/ वगले/ ले दुखारे

नहँ/ लो

गेलो/ लेलो/ लेवँ/ गेनहँ/ लेनहँ/ लेनँ

जथ/ जाहि/ जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगथगाम/ जेथगाम

एहि/ थहि

थग (बोझक थतमे ब्राह्म / ए

थगछ/ थछि/ एछ

तथ/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सोथि/ सोथ

जोरि/ जोरी/ जोर

बनेही/ बवहि



तेँ/ तँग/ तँए

जापरै/ जएरै

नग/ नै

ढग/ ढै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै

डवि/ डव्हि ...

समय शेरुंदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै टै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवसे छद
आ रिभक्ति जूठल छद जना छदसँ, छदमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जै

जरिया/ जाहिया/ जगिया/ जैरिया

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि अँड

तग/ तहि/ तै/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भले/ भलेही/

भवहि

तेँ/ तँग/ तँए

जापरै/ जएरै

नग/ नै

ढग/ ढै

नहि/ नै/ नग



गगल

लै

डमि/डमि

टुकल अडि/लैव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्थक्य

नीटाँक सूत्रमे देव विकल्पमेसँ लैखण्ड एडिटेव द्वारा कोष कप टुगव जेरौक टाली:

लौण्ड कथन कप त्राह:

१. होयरैना/ होरैयरैना/ होमयरैना/ हेरैरैना, हेमरैना/ होयरौक/होरैयरैना /होयरौक

२. आ /आ२

आ

३. क लेल/क२ लेल/कय लेल/कय लेल/न /न२/नय/नय

४. ड गेल/ड२ गेल/डय गेल/डय

गेल

५. कव' गेलाह/कव२

गेलाह/कवय गेलाह/कवय गेलाह

६.

मिथ/दिथ मिथ ,दिथ ,मिथ ,दिथ /

७. कव' रैना/कव२ रैना/ कवय रैना कवैरैना/क'व' रैना /

कवैरैना

८. रैना रना (प्रकय), रानी (सूनी) ९

.

आँडव आँग

१०. आँयः त्रायह

११. दुःख दुख १

२. टलि गेल टव गेल/टैन गेल

१३. देवबिह देवकिह, देवबिह



१४.

देखवहि देखवनि/ देखवैह

१५. **डबिह/ डवहि डबिष/ डलेष/ डवनि**

१६. **चवैत/दैत चवति/दैति**

१७. **एथला**

एथला

१८.

रैठनि रैठजण रैठहि

१९. **उ' /उ२(सरैनाग) उ**

२०

उ (सैयोजक) उ' /उ२

२१. **फाणि/फाषि फागण/फागणु**

२२.

जे जे /जे२ २३. ना-शुक्व ना-शुक्व

२४. **केवहि/केवनि/कवनिहि**

२५. **तखणत' / तखण त'**

२६. **जा**

बलव/जाय बलव/जाय बलव

२७. **निकवया/निकवय**

वागव/ वगव रैलवाय/ रैलवाय वागव/ वगव निकव /रैलवै वागव

२८. **उतय/ जतय जत / उत / जतय/ उतय**

२९.

की शुक्व जे कि शुक्व जे

३०. **जे जे /जे२**

३१. **कुदि / यादि(मोष पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/**

यादि (मोष)

३२. **गलो/ ओलो**



३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सप्त-सप्त सप्त-सप्त

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की / की२ (दीधीकावापुषे २ रक्षित)

३८. जराँ जराँ

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दलान दिमि दलान दिमि/दवान दिस

४१

. लावाह गवाह/गवाह

४२. किड आब किड उव/ किड आब

४३. जाग डव जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेँ जागत डव जेँ जाग डव गहुँटा/ जेँ जागत डव

४५.

जराँ (शरा)/ जराँ(शोजी)

४६. वय/ वय क / क२/ वय क३ / व२ क२/ व२ क३

४७. व /व२ क३/

क३

४८. एथन / एथल / अथन / अथल

४९.

अलीकँ अलीकँ

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गाँव केनाँ धाव गाँव केनाँ/केनाँ

५२. जेकाँ जेकाँ



झकाँ

३३. तहिन तहिन

३४. एकव अकव

३५. रहिन रहिन

३६. रहिन रहिन

३७. रहिन-रहिन

रहिन-रहिन

३८. नहि/ ले

३९. कवरी / कवरीय/ कवरीय

४०. तँ/ त २ तय/तय

४१. तैयारी ये जेठ-ताय/तै, जेठ-ताय/जै

४२. गिनतीये दू भाग/भाय/जै

४३. गौपथी दू भाग/जै/ भाय/ जेठ। यारत जारत

४४. माय ये / माय दूद मायक मयत

४५. देहि/ दय दयि/ दयहि/ दयहि दहि/ दैहि

४६. द / द२/ दय

४७. उ (संयोजक) उ२ (सरन्याय)

४८. तका कय तकय तकय

४९. पैले (on foot) गयले कयक/ कैक

१०.

तहिन/ तहिन

११.

प्रतीक

१२.

रहिन कय कय / क२

१३. रहिनय/रहिनय

१४. कोवा



१३.

तियका तिका

१३.

ततछिँ

११. गवरँउवहि/ गवरँवनि/

गवरँवहि/ गवरँवनि

१४. रौब रौव

१६.

तेह टिह(खरक)

+०. जे जे'

+१

. से/ के से /के'

+२. एखुका अखुका

+३. भूमिहाव भूमिहाव

+४. सुखव

/ सुखवका सुखव

+३. सठहाक सठहाक +३.

तुषि

+१. कवगयो/उ कवेयो ल देवक /कवेयो-कवगयो

+४. गुराधि

गुराधि

+६. सगड १-साँछी

सगड १-साँछी

६०. गखे-गखे पौले-पौले

६१. खेवखेक

६२. खेवखेक



९३. वगी

९४. लेख- लो - लोख

९५. ब्रूमव ब्रूमव

९६.

ब्रूमव (संबोधन अर्थमे)

९७. येह यएह / अएह/ सेह/ सएह

९८. तातिय

९९. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

१००. निन्न- निन्द

१०१.

बिबु बिब

१०२. जग जग

१०३.

जाग (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत नव आदि जाग

१०५.

ल

१०६. खेवाए (pl ay) -खेवाग

१०७. शिकागत- शिकायत

१०८.

ठग- ठग

१०९

. गठ- गठ

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकमे

११२. लेख/ लेख लेख

११३. अडवन्त-



उक्त

११४. बुँसेवहि (different meaning - got understand)

११५. बुँसएवहि/बुँसेवनि/ बुँसयवहि (understood himself)

११६. छलि- चव/ चमि लाव

११७. ख्याँ- ख्याय

११८.

मोस गाँउवबिह/ मोस गाँउवबिनि/ मोस गाँवबिह

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाग

१२२. जवनाग/ जवनाग- जवनाग/

जवनाग

१२३. लोगत

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि

१२५.

छिबैत- (to test) छिबैत

१२६. कबज्यो (willing to do) कबज्यो

१२७. जेकवा- जेकवा

१२८. तेकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसव/ बिदेसव/ बिदेसव/ बिदेसव

१३०. कबरोवहुँ/ कबरोवहुँ/ कबरोवहुँ कबरोवहुँ

१३१.

हाकि (उँचावा लोअवक)

१३२. ओज रजस अँसोच/ अँसोच/ अँसोच/ अँसोच/ अँसोच/ अँसोच



१३३. थीसै भाग/ थीस-भास

१३४. निज / निजाय/निजा

१३५. नपुं / ल

१३६. रैज नपुं

(ल) निज जाय

१३७. तखन ल (नपुं) कहेत थि। कहे/ सुलै देखे छव नपुं कहेत-कहेत/ सुलैत-सुलैत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कमाज-धमाज/ कमाज- धमाज

१४०

- वग वग

१४१. खेवाज (for playing)

१४२.

डबिहा डबिहा

१४३.

लोजत लोज

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

- रैजनाज/ रैजनाय/ रैजना

१४८. जखेनाज

१४९. ककरी कसी

१५०. चवटा चर्चा



१३.१. कर्म कवय

१३.२. डूराँरै/ डूराँरौ/ डूयारै/ डूयारैय/ डूयारैय

१३.३. एथुनका/

एथुनका

१३.४. वय/ विथय (राकाक अंतिम गेह्र)- वय

१३.५. कएनक/

कएनक

१३.६. गवयी गर्ग

१३.७

बवदी बदी

१३.८. सुना लोवाह सुना/सुना२

१३.९. एनाथ-लनाथ

१३.१०.

तेना ल येवदहि/ तेना ल येवदनि

१३.११. नय / ले

१३.१२.

उवा उवा

१३.१३. कतहु/ कतौ कली

१३.१४. उंयविगव-उंयवगव उंयवगव

१३.१५. उविगव

१३.१६. धोत/धोथय धोएन

१३.१७. गग/गग

१३.१८.

क क

१३.१९. दवरैका/ दवरैजा

१३.२०. गीय

१३.२१.



धवि तरु

११२.

धुवि लोष्ट

११३. खोबरेंक

११४. बँड

११३. रौं/ तूँ

११७. रौंहि (पगमे ग्राह)

१११. रौंलि / रौंलि

११५.

कबरौंओ कबरौंओये

११६. एकेठी

१५०. कबितथि / कबतथि

१५१.

गुँटि/ गुँट

१५२. बाखनहि बखनहि/ बखननि

१५३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

१५४.

बुनि (डँचावा बुण)

१५३. खडि (डँचावण खण्ड)

१५७. एवथि लोवथि

१५१. रिंतोल/ रिंतोल/

रिंतोल

१५५. कबरौंओनहि/ कबरौंओननि

करेवथिह/ करेवथिनि

१५६. करेवथिह/ करेवथिनि

१६०.



आकि कि

१९१. गहुँटा

गहुँट

१९२. रौती जवाय/ जबाए जबा (आणि नगा)

१९३.

से से

१९४.

हाँ से हाँ (सौंसे हाँ विभक्तिसे ल्हाँ कए)

१९५. खैन खैन

१९६. फुअव(spacious) खैन

१९७. होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/ होतनि/ होतहि

१९८. हाथ मटियाएरें/ हाथ मटियारैय/ हाथ मटियाएरें

१९९. खेका खेका

२००. देखीए देखी

२०१. देखीरैय

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

साहेरें साहेरें

२०४. गोलैह/ लावहि/ लावनि

२०५. हेरौक/ होएरौक

२०६. केला/ कएनहूँ/ केलाँ/ केरौँ

२०७. किड न किड/

किड ल किड

२०८. घुमेनहूँ/ घुमाउ नहूँ/ घुमेलाँ

२०९. एनाक/ अएनाक

२१०. अः/ अह

२११. नय/



वष (अर्थ-परिवर्तन) २१२ कर्षक/ कलक

२१३.सर्वलक/ सलक

२१४.गिला२/ गिवा

२१५.क२/ क

२१६.जा२/

जा

२१७.आ२/ आ

२१८.भ२ / भ (फॉन्टिक कमीक आतक)

२१९.निथम/ नियम

२२०

.लेबईअवा/ लेबईयव

२२१.गहिव अफव ठा/ रौदका/ रौचक ठ

२२२.तहि/तहिं/ तयि३/ तै

२२३.कहि/ कही

२२४.तँअ/

तै / तअ

२२५.नँग/ नगँ/ नयि३/ नहि/लै

२२६.है/ हय / एवौहै/

२२७.छयि३/ छै/ छैक /छग

२२८.दृष्टिअँ/ दृष्टियै

२२९.आँ (come)/ आँ२(conj unct i on)

२३०.

आँ (conj unct i on)/ आँ२(come)

२३१.कला/ कोला/ कोणा/कणा

२३२.गोलैह-गवहि-गवनि

२३३.हैरौक- होएरौक

२३४.कैलौ- कएलौ-कएलहँ/कलौ



२३३. किड न किड- किड ल किड

२३७. केहेन- केहन

२३१. आँ (come)- आँ (conjunction-and)/आँ । आँ-आँ /आँह-आँह

२३४. हएत-हेत

२३६. घुमेनहूँ-घुमेनहूँ- घुमेवाँ "

२४०. एवाँक- एवाँक

२४९. होनि- होनि/ होहि/

२४२. उ-बाग उ आगक रीट(conjunction), उ२ कहक (he said)/उ

२४३. की हए/ कोनी एवाँ हए/ की हे । की हए

२४४. दृष्टिँ/ दृष्टियँ

२४७.

. गोमिवा/ गोमिवा

२४७. तँ / तँ/ तमी/ तहि

२४१. जौ

/ जाँ जाँ

२४४. सभ/ सभ

२४६. सभक/ सभक

२४०. कहि/ कही

२४९. कला/ कोला/ कोनहूँ/

२४२. कबकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२४३. कोना/ कोना/ कना/ कना

२४४. एः/ एह

२४७. जलै/ जनए

२४७. गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२४१. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२४४. वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)



२३९. कर्षक/ कलक/कनी-यनी

२४०. गठवहि गठवनि/ गठवण/ गणठवणहि/ गठवोवनि/

२४१. निशय/ नियम

२४२. हेबटथव/ हेबटथव

२४३. गह्वि अरुव बहल ठा रीचमे बहल ठ

२४४. आकावाप्तमे रिकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोस्ट्रॉफीक प्रयोग हान्स्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक
उकव रैदना अरुग्रह (रिकारी) क प्रयोग उचित

२४५. केव (गयमे ज्ञाह) / -क/ क२/ के

२४६. डेहि- छहि

२४७. नलोथ/ नलोथे

२४८. होएत/ हएत

२४९. जाएत/ जएत/

२५०. आएत/ अएत/ आउत

२५१

. आएत/ अएत/ अएत

२५२. निशयरीक/ निशयरीक/ नियरीक

२५३. गुरु/ गुरुह

२५४. गुरुले/ गुरुह

२५५. अएतह/ अउतह/ एतह/ एतह

२५६. जाहि/ जाग/ जग/ जे/

२५७. जाएत/ जेतए/ जएतए

२५८. आएव/ अएव

२५९. केक/ कएक

२६०. आगव/ अगव/ आगव

२६१. जाए/ जअए/ जए (नावति जाए नगनीह ।)

२६२. गुरुएव/ गुरुएव

२६३. कर्तृआएव/ कर्तृअएव



२+४. ताहि/ तै/ तर्ष

२+३. गायरौ/ गापरौ/ गपरौ

२+३. सकै/ सकए/ सकय

२+१. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेल)

२+१. कहेत बखी/देखैत बखी/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- खलिना चलेत/ गटेत

(गटे-गटेत अर्थ कखला काव परिवर्तित) - आव बूसे/ बूसेत (बूसे/ बूसे छी दूदा बूसेत-बूसेत)/
सकेत/ सके। करैत/ करै। दे/ देत। छेक/ छे। बखै/ बखैक। बखरौ/ बखरौक। बिग/ बिग।
वातिक/ वातिक बूसे आ बूसेत केव अण-अण जगहन शयौग समीप अछि। बूसेत-
बूसेत आरौ बूमधि। हयहूँ बूसे छी।

२+२. दुखी/ दुख

२+०. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२+५.

ख/ खी/ खी (लेव ख/ लेव खी)

२+२. तक/ धवि

२+३. ग२/ लौ (meaning different - जनरौ ग२)

२+४. म२/ सँ (दूदा द२, न२)

२+३. ७. त्र (तीन अक्षरक मेल रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा दोसबक उगयोग) आदिक रँदना ह
आदि। मह७. मह७/ कर्ता/ कर्ता आदिये उ सहायक कोला आरथकता येथिनीये ले अछि। रउर

२+३. रौसी/ रौसी

२+१. रौना/ राना रँवा/ रना (बहेरँना)

२+१

. रावी/ (रँदनेरावी)

२+२. राती/ राती

३००. अशुबिष्टिय/ अशुबिष्टीय

३०५. लय/ लय

३०२. लय/ लय

३०२. वाली/ वाली (

लेलेत/ लेले)

३०३. वाग/ वाग



३०४. हरी/ हर

३०५. बाधक/ बधक

३०६. थी (come)/ थी (and)

३०७. पश्चात्ताप/ पश्चात्ताप

३०८. २ केव रारहाव शैक्षिक अनुभवे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

३०९. कहेत/ कहे

३१०.

बह (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवास/ खवार

३१३. रौग/ रौगि/ रौगि

३१४. जार्ति/ जार्ति

३१५. कागज/ कागज/ कागज

३१६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिर (थस)

३१७. बहिय/ बहिय

DATE-LIST (year - 2012-13)

(१४२० हसदी मास (

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31



June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14

February 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013- 1

April 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

Mundan Din:

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24

February 2013- 1, 14, 15, 20, 28

April 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

July 2013- 10, 15



FESTIVALS OF MTHILA (2012-13)

- Mauna Panchami -08 July
Madhushravani - 22 July
Nag Panchami - 24 July
Raksha Bandhan- 02 Aug
Krishnastami - 10 August
Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August
Vishwakarma Pooja- 17 September
Hartalika Teej - 18 September
ChauthChandra-19 September
Karma Dharma Ekadashi -26 September
Indra Pooja Aarambh- 27 September
Anant Caturdashi - 29 Sep
Agastyarghadaan- 30 Sep
Pitri Paksha begins - 30 Sep
Jimootavahan Vrat a/ Jitija-08 October
Matri Navami - 09 October
Somvati Amavasya Vrat - 15 October
Kalashstapan- 16 October
Belnauti - 20 October
Patrika Pravesha- 21 October
Mahastami - 22 October



Maha Navami - 23 October

Vijaya Dashami - 24 October

Kojagara - 29 October

Dhanteras - 11 November

Diyabati, shyama pooja - 13 November

Anakoota/ Govardhana Pooja - 14 November

Bhratri dwitya/ Chitrakoota Pooja - 15 November

Chhatra - 19 November

Devottana Ekadashi - 24 November

navaratri - 25 November

Navanna parvan - 25 November

Kartik Purnima - Samavisan - 28 November

Vivaha Panchmi - 17 December

Makar Sankranti - 14 January

Narak Chaturdashi - 08 February

Basant Panchmi / Saraswati Pooja - 15 February

Achha Saptmi - 17 February

Mahashivaratri - 10 March

Holi Kadahan - Fagua - 26 March

Holi - 28 March

Varuni Trayodashi - 07 April

Chaiti Navaratri - 11 April

Jurishital - 15 April



Chaiti Chhat hi vr at a-16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savi tri -bar asai t - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavat i Amavasya Vr at a- 08 July

Jagannat h Rat h Yat ra- 10 July

Hari Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Pbor ni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHIVE

१.पत्रिकाक सबठो पुरान अंक ब्रैल-रिदेह अ, तिवहूत आ देरनागरी कपमे Vi deha e journal's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अंकक ३.०पत्रिकाक पहिल -

रिदेह अंकक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३.डियो संकलन आ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४.मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos



<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

रिदेहक एहि सब सहयोगी बिकसब सेहो एक लेब जाई ।

३. रिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. रिदेह मैथिली जानरूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. रिदेह मैथिली साहित अंग्रेजीमे अबुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. रिदेहक पुरि-कग "भानसबिक गाढ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. रिदेह गँडेक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह फागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पहिल तिवरूता (मिथिलाक सब) जानरूत (बैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल लेब रिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक आ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१७. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशिन.

<http://www.shruti-publication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेअ

http://gajendratyakur123.blogspot.com

२४. लषा कुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३.बिदेह लेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  [Videha Radio](http://videharadio.com/)

२९.  [Join official Videha facebook group.](https://www.facebook.com/videhaofficial)

२५. बिदेह मैथिली बाँठ उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>



२९.सगदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maitihili films.blogspot.com/>

३१.अक्षरचिह्न आथव

<http://anchinharakhar kol kat a.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maitihili-hai ku.blogspot.com/>

३३. माणक मैथिली

<http://manak-maitihili.blogspot.com/>

३४. विहनि कथा

<http://vihani kat ha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिजा

<http://maitihili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maitihili-kat ha.blogspot.in/>

३७.मैथिली समालोचना

<http://maitihili-samalochna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maitihili pdf books are AVAILBLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



रिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:+७९० "रिदेह"क छिठ संस्करण: रिदेह-३-पत्रिका
 (<http://www.videha.co.in/>) क छान बच्चा समिति ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

रिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(८)२००४-१३. सर्राधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संग्रहदकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA **सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: मिर कमार साँ आ क्लोजी (मलाज कमार कर्ण) । ज्यो-सम्पादन: नागेश्वर कमार साँ आ गङ्गीकाव विद्यालक्ष्मी साँ । कव-सम्पादन: ज्योति साँ टोषरी आ बग्गि लेखी मिश्र । सम्पादक-लोच-अनुसूचक: डा. ज्योती रम्याँ आ डा. बंजीर कमार रम्याँ । सम्पादक- नाटक-वैगम-चवटि-बैरस ठाकुर । सम्पादक- सुनो-संपर्क-समाद- पुनम मंडल आ हिर्याँ साँ । सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनोद उमेश ।**

बचनाकाव अपन मौलिक आ अग्रकाशित बचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उतबदासिह लेखक गणक मध्य छुह) ggajendra@videha.com केँ मेन अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf आ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छुह । बचनाक संग बचनाकाव अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्तन कएन गेन लोठे पठेताह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे प्रीतिगत बहस, जे ई बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकालेँ देन जा बहन अछि । मेन प्राप्ति होयबक बाद यथार्थतः शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संरक्षित बचना प्रकाशित कएन जायत अछि । एहि ई पत्रिकालेँ प्रीतिगता क्लोजी ठाकुर द्वारा मासक ०९ आ १३ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(८) 2004-13 सर्राधिकार स्वक्षित । रिदेहमे प्रकाशित सञ्ज्ञा बचना आ आर्काइवरक सर्राधिकार बचनाकाव आ संग्रहकर्ताक नगमे छुह । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्काइवरक उपयोगक अधिकार किनबक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क कर । एहि सांगठिकेँ प्रीतिगता क्लोजी ठाकुर, मधुलिका टोषरी आ बग्गि शिवा द्वारा डिजाइन कएन गेन ।



सिंहिबहु

